वेदों की
ओर
लौटो।

वेदोद्धारक, युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द

।। ओ३म् ।।

।। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।।

वेद प्रतिपादित मानवीय मूल्यों को जन-जन तक पहुँचाने हेतु
कार्यतत्पर सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का

मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

वर्ष १७ अंक ८ १० अगस्त २०१७

धैर्य धुरंधर, अद्भुत राजनीतिज्ञ, आर्य धर्म संस्थापक

योगेश्वर श्रीकृष्ण का अर्जुन को गीतोपदेश

जन्माष्टमी पर्व पर विनम्र अभिवादन !

राज्यस्तरीय पुरोहित प्रशिक्षण शिविर, परली

समापन समारोह में विचार व्यक्त करते हुए श्री नारायण कुलकर्णी। साथ में है मार्गदर्शक पं.राजवीरजी शास्त्री, पं.जयेंद्रजी, सभाप्रधान डॉ.ब्रह्ममुनिजी एवं राठौरजी।

तपस्वी वानप्रस्थी पू.सोममुनिजी का गौरव करते हुए सभा प्रधान डॉ.ब्रह्ममुनिजी। साथ में हैं कोषाध्यक्ष श्री उग्रसेन राठौर।

मंचपर विराजमान सभा के पदाधिकारी, विद्वान तथा सामने बैठे हुए प्रशिक्षणार्थी।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का

मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३,११८ | कलि संवत् ५११८ | विक्रम संवत् २०७४

दयानन्दाब्द १९४ | श्रावण/भाद्रपद | १० अगस्त २०१७

प्रधान सम्पादक
माधव के.देशपांडे
(९८२२२९५५४५)

मार्गदर्शक सम्पादक
डॉ.ब्रह्ममुनि
(९४२१९५११९०४)

सम्पादक
डॉ.नयनकुमार आचार्य
(९४२०३३०१७८)

सहसम्पादक: प्रा.देवदत्त तुंगार(९३७२५४१७७७) प्रा.ओमप्रकाश होलीकर(९८८१२११५६१६), प्रा.सत्यकाम पाठक(९९७०५६२३५६), ज्ञानकुमार आर्य(९६२३८४२२४०)

अनुक्रम

हिन्दी विभाग

१) सम्पादकीय ५
२) संस्कृत की अनन्त शब्दावली ६
३) 'वेदप्रचार' आर्य समाज का मुख्य कार्य है ७
४) स्वामी अग्निवेश का राष्ट्रद्रोही वक्तव्य १०
५) वेदों में समानता के सिद्धान्त ११
६) जय-जय भारतभूमि महान्(काव्य) १७
७) राज्यस्तरीय निबंध प्रतियोगिता के परिणाम १८

मराठी विभाग

१) उपनिषद संदेश/दयानंद वाणी १९
२) असे जाहले पुरोहित शिबिर २०
३) मत-पंथ, राजकारण व भ्रष्टाचार २४
४) परमेश्वराची भक्ती का व कशासाठी ? २६
५) पं.नरेंद्रजींचे प्रेरक आत्मचरित्र(ग्रंथ समीक्षण) २९
६) वार्ताविशेष ३१
७) शोकवार्ता ३३

*** प्रकाशक ***
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
सम्पर्क कार्यालय-आर्य समाज,
परली-वैजनाथ ४३१५१५

*** मुद्रक ***
वैदिक प्रिन्टर्स
महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा
आर्य समाज, परळी-वै.

वैदिक गर्जना के शुल्क
वार्षिक रु.१००/-
आजीवन रु.१०००/-

इस मासिक पत्रिका में प्रकाशित लेखों तथा विचारों से सम्पादक मण्डल सहमत हो, यह अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र परली-वैजनाथ जि.बीड ही होगा।

श्रुतिसुगंध — आप्तपुरुष का स्वरुप

इच्छन्ति त्वा सोम्यासः सखायः सुन्वन्ति सोमं दधति प्रियांसि।

तितिक्षन्तेऽअभिशस्ति जनानामिन्द्र त्वदा कश्चन हि प्रकेतः।।

पदार्थान्वय– हे **(इन्द्र)** राजन् ! जो **(सोम्यासः)** ऐश्वर्य आदि में श्रेष्ठ **(सखायः)** मित्रजन**(सोमम्)** ऐश्वर्य आदि को **(सुन्वन्ति)** निष्पन्न करते हैं, **(प्रयांसि)** कामना करने योग्य विज्ञान आदि गुणों को **(दधति)** धारण करते हैं और **(जनानाम्)** मनुष्यों के **(अभिशस्तिम्)** दुर्वचनों को **(आ+तितिक्षन्ते)** सब ओर से सहन करते हैं, उनका तू सदा सत्कार कर। **(हि)** क्योंकि **(त्वत्)** तुझ से **(प्रकेतः)** उत्तम प्रज्ञावाला **(कश्चन)** कोई नहीं है, अतः सब तुझे चाहते हैं। (यजु.३४/१८)

भावार्थ – जो मनुष्य इस संसार में निन्दा–स्तुति, लाभ–हानि आदि को सहन करनेवाले, पुरुषार्थी, सब के साथ मैत्री करनेवाले आप्त हैं, उनकी सब सेवा किया करें और उनका सत्कार किया करें । ऐसे आप्त पुरुष ही सब मनुष्यों के अध्यापक और उपदेष्टा होने चाहिये।

धर्मराज युद्धिष्ठिर द्वारा योगेश्वर कृष्णजी को नमन

(कुन्तिपुत्र युधिष्ठिर महाभारत युद्ध के पश्चात् श्रीकृष्ण के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए उनका गुणगान कर उन्हें अभिवादन करते हैं)

तव कृष्ण प्रसादेन नयेन च बलेन च ।
बुद्ध्या च यदुशार्दूल तथा विक्रमणेन च ।।
पुनः प्राप्तमिदं राज्यं पितृपैतामहं मया ।
नमस्ते पुण्डरीकाक्ष पुनः पुनररिंदम ।।

हे यदुवंशियों में सिंह तुल्य पराक्रमी श्रीकृष्ण! हमें जो यह पैतृक राज्य फिर प्राप्त हो गया है, यह सब आपकी कृपा, अद्भुत राजनीति, अतुलनीय बल, लोकोत्तर बुद्धि कौशल तथा पराक्रम का ही फल है। इसलिए हे शत्रुओं का दमन करनेवाले कमलनेत्र श्रीकृष्ण! आपको हम बारंबार नमस्कार करते हुए हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करते हैं। **(महाभारत शान्ति.४३ प्र.)**

संपादकीयम्

राष्ट्रहित सर्वोपरी है ...

इस वर्ष देश अपनी स्वतन्त्रता के सत्तर वर्ष पूर्ण कर रहा है । परिपाठी के अनुसार यह स्वतन्त्रता दिवस आयेगा और जायेगा। वर्षगांठ मनानें की परम्परा तो जारी ही है, किन्तु देश की गम्भीर परिस्थितियों व बढती समस्याओं पर कोई विचारने के लिए कोई तैयार नहीं है। हम सोचते हैं कि सब कुछ सरकार ही करेंगी, हम तो केवल अपना व अपने घर-परिवार ही सोचेंगें, तो क्या यह समुचित है? हमारा निजी स्वार्थ भी तभी सफल माना जाएगा, जब हमारा देश सुखी व सुरक्षित रहेगा। इसलिए हमें अपने व्यक्तिगत जीवन के यथार्थ कल्याण के साथ ही देशहित में भी सोचना चाहिए। सामान्य नागरिक हो या प्रतिष्ठाप्राप्त व्यक्ति! सभी को अपने देश के हित में विचार करना चाहिए! हमारा चिंतन, हमारी वाणी व हमारे कर्म से कहीं देश का नुकसान न हो? इसका ध्यान हम सबको रखना चाहिए ! विशेषकर देश के नेताओं, धर्मगुरुओं व साम्प्रदायिक लोगों पर सर्वाधिक जिम्मेदारी आ पडती है कि वें मनसा, वाचा व कर्मणा सर्वथा राष्ट्रहित में ही संलग्न रहें। चाहे इसके लिए हमें फिर अपनी वैयक्तिक आकांक्षाओं पर पानी भी फेरना पडे तो चलेगा, किन्तु हमें सदैव देश के सर्वहित को अग्रक्रम देना होगा ।

बीतें ७० वर्षों में जितनी सरकारें आयी, उन्होंने मूलभूत समस्याओं की जड तक पहुंचने का प्रयास ही नहीं किया। यहाँ तो तथाकथित धर्मनिरपेक्षता के नाम पर साम्प्रदायिक ताकतों को सदैव बढावा ही मिलता रहा है। गुण, कर्म व स्वभाव के स्थान पर मनुष्यकृत जाति व सम्प्रदाय को आधार बनाकर आरक्षण लागू हुआ। उसकी आरम्भिक निश्चित अवधि को बढा-बढाकर जनता को आलसी व कर्महीन तो बना दिया, जिसका सर्वाधिक विपरीत परिणाम राष्ट्र की गुणवत्ता पर हुआ है। शिक्षा क्षेत्र में हमारी अपनी प्राचीन गुरुकुलीय पद्धति को ठुकराकर मेकॉले की पाश्चात्य सहशिक्षाप्रणाली अपनाने से आज युवक-युवतियों में बडे पैमाने पर चरित्रभ्रष्टता छा चुकी है । बच्चों के लिए आरम्भ से ही यदि सच्चरिता, अध्यात्म व योग की शिक्षा का प्रावधान रहता, तो आज देश का उज्ज्वल चित्र दिखाई देता? स्वतन्त्रता, समता एवं बन्धुता इन संवैधानिक तत्वों का अपहरण खुलेआम होता देख सच्चे राष्ट्रभक्त की आंखों में आंसू बहे बगैर नहीं रहेंगें? हाल ही में जब मद्रास उच्च न्यायालय ने सभी को 'वन्दे मातरम्' कहने का फैसला सुनाया, तब उसका अवमान करने का दुःसाहस कट्टरपंथियों द्वारा हो तो क्या इन्हें सही अर्थों में राष्ट्रभक्त कहा जा सकेगा? और जब इन्हीं की पंक्ति में खडे होकर आर्य जगत् का कोई एक संन्यासी भी 'वन्दे मातरम्' कहने का विरोध करता हो, तो इससे बढकर दुर्भाग्य की बात और क्या हो सकती है ? अतः सभी संकीर्णताओं छोडकर देश के सम्पूर्ण हित में सोचेंगे, तो ही सबका भला होगा...!

- नयनकुमार आचार्य

संस्कृत की अनन्त शब्दावली

– प्रो.नन्दिश, प्रवक्ता–कम्प्यूटर विज्ञान
(लूटन विश्वविद्यालय–इंग्लैण्ड)

मन की भावनाओं को प्रकट करने की जितनी क्षमता संस्कृत भाषा में है, उतनी संसार की अन्य किसी भाषा में नहीं हैं। प्रत्येक भाव को अपेक्षित रुप से स्पष्ट करने के लिए संस्कृत में अनगिनत शब्द बना सकते हैं।संस्कृत में २००० से अधिक धातु/क्रियापद और २१ उपसर्ग हैं। उपसर्गों के जुड़ने से धातु/क्रिया का अर्थ और अधिक स्पष्ट हो जाता है अथवा धातु का अर्थ बदलकर नया अर्थ बन जाता है। प्रत्येक क्रियापद से एक अथवा दो उपसर्ग जोडने से क्रियापदों की संख्या ६,८०,००० हो जाती है। उस एक–एक क्रियापद से काल, वचन और पुरुष के अनुसार न्यूनतम ९० रुप बनते हैं। इन ९० रुपों में प्रत्येक रुप के सन्नन्त, णिजन्त, यङन्त, यङ्लुगन्त आदि प्रक्रियाओं में रुप बनते हैं। इस प्रकार लगभग ६७,५०,७९,४६० रुप बनते हैं। इनके अतिरिक्त प्राथमिक प्रत्ययरुप मिलकर ७७,४९,६५,६८,१२८ प्रधान/मुख्य शब्द बनते हैं। इसी प्रकार १५,१०,६५,४३,२०० अप्रधान प्रत्ययों के शब्दरुप बनते हैं। कुलनाम वाचक शब्द ४,२८,८४,५८,३३० हैं। ये सारे रुप मिलकर संस्कृत में लगभग १०,२७,८५०लाख(१,०२,७८,५०,००,०००) शब्द बनते हैं।

इनमें समास एवं अव्ययों की गिनती नहीं है। इन शब्दों से बननेवाले समासों को भी गिना जाय, तो संस्कृत में भाव प्रकट करने के लिए प्राप्त शब्दों की संख्या अनन्त हैं। 'आङ्ग्ल–भाषा(अंग्रेजी) का इतिहास' नामक ग्रंथ में आङ्ग्ल–भाषा, युरोपीय भाषाओं में समृद्ध भाषा के रुप में बतायी गयी है। उसमें कम्पेण्डियस–ऑक्सफोर्ड–डिक्शनरी के आधार पर जर्मन भाषा में १,८५,०००, फ्रेंच भाषा में १,००,००० और आङ्ग्ल–भाषा में ५,००,०००+५,००,००० (सांकेतिक, वैज्ञानिक)=१०,००,००० शब्द बताये गये हैं। ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी में अंग्रेजी शब्दों की संख्या ६,५०,००० बतायी गयी हैं।

इससे आप संस्कृत–भाषा के महत्त्व एवं उसके भाव प्रकट करने के सामर्थ्य के अनुमान कर सकते हैं।

१. इसमें वैदिक (लेट् लकार) के रुप सम्मिलित नहीं हैं, जो लाखों बनते हैं।
२. पाणिनीय धातु पाठ के २००० धातुओं के अतिरिक्त काशकृत्स्न धातुपाठ में लगभग ८०० धातु और जिनेन्द्रादि व्याकरणों के स्त्रौत धातु लगभग २०० हैं। इन १०००(८००+२००) अतिरिक्त धातुओं से ५० प्रतिशत शब्द और बन सकते हैं।

'वेद प्रचार' आर्य समाज का मुख्य कार्य है!

– डॉ.महेश विद्यालंकार

दु:खद पीडा है कि आज का आर्य समाज अपने मूल उद्देश्यों, आदर्शों, सिद्धान्तों आदि से हट रहा है, जो मुख्य कार्य 'वेदप्रचार' था, जिससे व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र और विश्व को आर्य बनाना था, जिसके लिए ऋषिवर ने सम्पूर्ण जीवन आहुत कर दिया, जिस वेद प्रचार के लिए अनेक तपस्वी, त्यागी, महापुरुषों ने अपना तन–मन और धन लगा दिया, जो वेदज्ञान आर्य समाज की पहचान और जान थी,वह वेदप्रचार घट रहा है। वेद प्रचार की जगह स्कूल, औषधालय, बारात घर, दुकानें, मैरिज ब्यूरो आदि ले रहे हैं। अब दान, चन्दा, धर्मप्रचार आदि के पैसे को खाते हुए पाप बोध,अपराध बोध तथा आत्मग्लानि नहीं हो रही है? यह हमारे नैतिक मूल्यों के पतन का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

सृष्टि को आरम्भ में परमपिता ने प्राणिमात्र के कल्याण व उत्थान के लिए वेदों का ज्ञान प्रदान किया । वेद ईश्वरीय ज्ञान है। वेद ज्ञान परमेश्वर का जगत को आदेश, उपदेश और सन्देश है । इसलिए वेद सबके, सबके लिए तथा सबको पढने एवं सुनने का अधिकार है । वेदों का चिन्तन मानवता का चिन्तन है । वेद सृष्टि की आचारसंहिता है । वेद पुकार–पुकार कर कह रहे हैं– **'श्रृण्वन्तु सर्वे अमृतपुत्रा:।'** वेदों की विचारधारा में क्षेत्र, जाति, वर्ग, देश आदि का भेदभाव नहीं है। वेद ज्ञान सार्वकालिक, सार्वदेशिक तथा सार्वजनिक हैं। वेदों का जीवन दर्शन ही आज के जीवन तथा जगत् को सत्य, धर्म, न्याय सुख शान्ति और सच्चा आनन्द दे सकता है। **''वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है''** ऐसी धारणा और मान्यता केवल आर्य समाज ही रखता है । आर्य समाज तथा उसकी विचारधारा की अनुयायी संस्थाओं में ही प्रात:काल पवित्र वेद मंत्रों से यज्ञ होता है । वेद सम्मेलन व वेद कथाएं यही संगठन आयोजित कराता है । वेदमंदिर तथा वेद की ज्योति जलती रहे, ऐसा आर्य समाज नारा देता है। वेदों की रक्षा, परम्परा, स्वरुप, पठन–पाठन को जीवित रखने और प्रचारित एवं प्रसारित करने की वसीयत एवं विरासत आर्य समाज को मिली है । दूसरे पंथ, सम्प्रदाय और विचारधारावाले नाम तो वेदों का लेते हैं, मगर वेदों को महत्व नहीं देते हैं । वेदों के पुनरुद्धार तथा प्रचार–प्रसार में ऋषिवर

…व दयानन्द का योगदान स्मरणीय एवं वन्दनीय है। उन्होंने वेदों का यथार्थ स्वरुप जनमानस को बताया । उन्होंने नारा दिया- 'वेदों की और लौटो। वेदों की मानों।' वेदज्ञान ही विश्वशान्ति और विश्व बन्धुत्व का सच्चा मार्ग दिखा सकता है। वेदज्ञान से बढकर श्रेष्ठज्ञान नहीं है।

आर्य समाज की स्थापना का मुख्य उद्देश्य रहा है- 'वैदिक धर्म का पुनरुद्धार वेद प्रचार। मूर्तिपूजा, अवतारवाद, ढोंग पाखण्ड, गरुडम आदि से जनता को बचाना।' अतीत का इतिहास साक्षी है कि आर्य समाज वैचारिक क्रांति की जीवन्त चेतना थीं, इसकी भूमिका रही है 'जागते रहो' । वेद परम्परा को जीवित रखने और आगे बढाने में आर्य समाज का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है । इसी का परिणाम है कि आज तक वेदों के मंत्रों में एक अक्षर की भी मिलावट नहीं हो सकी है । वेद मंत्रों के अर्थों में मिलावट के कारण ही अर्थ का अनर्थ हुआ है । इसीलिए लोग वेदों के भाष्यों को पढकर उल्टे सीधे, अर्थ लगाकर, वेदों के बारे में अनर्गल, निराधार तथा घृणित आरोप लगा रहें हैं, जो कि निन्दनीय है । आर्य समाज ने वेद के बारे में अनर्गल आरोपों के लिए सदा चैलेंज किया और आज भी चैलेंज करने की शक्ति व क्षमता रखता है।

आर्य समाज का मुख्य कार्य वेद प्रचार था। वेदों की शिक्षा और विचारधारा से व्यक्ति और चरित्र निर्माण होता है। वेदज्ञान जीवन तथा जगत् को सच्चा मार्ग बताता है। आज वेद प्रचार की बहुत जरुरत है। वेद प्रचार की कमी के कारण ही रोज नये-नये पन्थ, सम्प्रदाय, गुरु, महन्त महाराज आदि बन और फैल रहे हैं । इसीलिए ढोंग पाखण्ड, गुरुडम, अन्धविश्वास, अन्धश्रद्धा, जडपूजा आदि पहले से ज्यादा बढ रही है । यदि वेद प्रचार होता, तो धर्म, भक्ति और परमात्मा के नाम पर गुरुओं व महाराजाओं के इतने लम्बे चौडे पाखण्ड भरे व्यापार न फैलते! लोग मुर्दों से मुरादे न मांगते! पढे-लिखे, जिम्मेदार लोग निर्दोष जीवों की बलियां न चढाते? धर्म के नाम पर इतने झगडे विवाद न होते ? वेद ज्ञान का प्रचार एवं प्रसार होता, तो इतना पाप, अधर्म, भ्रष्टाचार, पतन, अनैतिकता आदि न होती?

दु:खद पीडा है कि आज का आर्य समाज अपने मूल उद्देश्यों, आदर्शों, सिद्धान्तों आदि से हट रहा है जो मुख्य कार्य वेद प्रचार था, जिससे व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र और विश्व को आर्य बनाना था, जिसके लिए ऋषिवर ने सम्पूर्ण जीवन आहूत कर दिया, जिस वेद प्रचार के लिए अनेक तपस्वी त्यागी, महापुरुषों ने अपना तन-मन और धन लगा दिया, जो वेद ज्ञान आर्य समाज की पहचान और जान थी,

वह वेद प्रचार घट रहा है । वेद प्रचार की जगह स्कूल, औषधालय, बारात घर, दुकानें, मैरिज ब्यूरो आदि ले रहे हैं । इन जीचों से आर्य समाज की साख, सात्विकता, धार्मिकता व पवित्रता नष्ट हो रही है ? स्वार्थ, विवाद, पदलोलुपता व अहंकार बढ रहा है। मूल छूट रहा है। जहां समाज मंदिरों में वेदाध्ययन शालाएं होनी चाहिए थीं ? वहां स्कूल और दूकानें हैं। उसे स्वार्थी और अधार्मिक लोगों ने अपनी आमदनी का साधन बना लिया। अब दान, चन्दा, धर्मप्रचार आदि के पैसे को खाते हुए पाप बोध, अपराध बोध तथा आत्मग्लानि नहीं हो रही है? यह हमारे नैतिक मूल्यों के पतन का प्रत्यक्ष प्रमाण है। इन बातों से संगठन व संस्थाओं में गिरावट आती है । विवाद बढते हैं । प्रभाव घटता है । जनता दूर हटती जाती है। नये जुडते नहीं, पुराने चले जाते हैं। जितनी आर्य समाज का प्रभाव तथा प्रचार-प्रसार होना चाहिए था, उतना हों नहीं रहा है। रचनात्मक, सुधारात्मक, क्रियात्मक, योजनाबद्ध कार्यक्रम हम जनता को नहीं दे पा रहे हैं? हम जनता से जुड नहीं पा रहे हैं । केवल जलसा, लंगर, फोटो और माला आदि यह वेदप्रचार नहीं है ? आज हम इन्हीं बातों को उपलब्धि मान रहे हैं!

यदि हम सच्चाई और ईमानदारी से वेद प्रचार चाहते हैं, तो उसके लिए मिल बैठकर गम्भीरता और ईमानदारी से सोचना होगा। पहले वेद प्रचार अपने से आरम्भ करना होगा? अपने कार्यकर्ताओं, संन्यासियों, विद्वानों, उपदेशकों, धर्माचार्यों आदि को सम्भालना होगा। उन्हें प्रोत्साहन, सहयोग, महत्त्व तथा वरीयता देनी होगी। अपनी पत्र-पत्रिकाओं को वेद प्रचार के रास्ते पर लाना होगा। जो आज मूल उद्देश्य से दूर हो रही है । स्थानीय समाज मन्दिरों व संस्थाओं को वेद प्रचार पर बल देने की जरुरत है । समाजों में उपस्थिति क्यों नहीं हो रही है ? लोग हमसे क्यों नहीं जुड रहे हैं ? क्यों का जवाब ईमानदारी से खोलना होगा । दुनियां की सर्वोत्तम विचारधारा का धनी आर्य समाज है ।

श्रावणी वेद प्रचार सप्ताह आता है, परम्परा निर्वाह हो जाती है ? अपनी पीडा छोड जाता है। वेद प्रचार की दिशा और दशा पर सम्पूर्ण आर्य जगत् को तत्काल गम्भीरता तथा पीडा से सोचने और करने की जरुरत है । वेद प्रचार आर्य समाज की आत्मा है। आत्मा के बिना शरीर का कोई महत्त्व नहीं होता है। समय की मांग है- वेद प्रचार की सोचो? इसे आगे बढाओ इसे जनता तक ले जाओ। जनता को जीवन और जगत् की सही दिशा नहीं मिल पा रही है । भटक रही है। आपकी ओर देख रही है ।

बी.जे.२९, पूर्वी शालीमार बाग, दिल्ली-५२

'मैं वन्दे मातरम् नहीं कहुँगा'

स्वामी अग्निवेश का राष्ट्रद्रोही वक्तव्य

महाराष्ट्र आर्य प्र. सभा द्वारा तीव्र निषेध

आर्य जगत् को यह जानकर गहरा आघात होगा कि तथाकथित संन्यासवेशधारी स्वामी अग्निवेश ने फिर एक बार राष्ट्रद्रोही जहर उगलकर अपना असली चेहरा दिखा दिया है । महाराष्ट्र के औरंगाबाद शहर में दि.२८ जुलाई २०१७ को मुस्लिम अवामी कमेटी की जनसभा में हजारों मुस्लिमों के उपस्थिति में जहरिले शब्दों में 'वन्दे मातरम्' कहने के लिए कडा विरोध किया। तथा मद्रास उच्च न्यायालय के निर्णय पर भी आपत्ती जतायी। उन्होंने वंदे मातरम् का आग्रह करने पर 'मैं भी इस राष्ट्रीय गीत को कभी नहीं गाऊँगा' ऐसा कहा। अपने बयान में उन्होंने कहा कि सरकार देशभक्ति का पाठ पढाना बंद करें, अब हमें अन्याय व अत्याचारों के विरुद्ध लढना होगा। जब दिल्ली में मुसलमानों द्वारा आंदोलन किया जायेगा, तब इसमें मैं सबसे आगे रहुँगा'। साथ ही श्री अग्निवेश ने राम मंदिर निर्माण का भी विरोध किया और कहा कि 'अयोध्या में मस्जिद हटाकर मंदिर बनाना गलत है । समय पडा तो इसका विरोध करने के लिए मैं सबसे आगे खडा रहुँगा।

जबरदस्ती कराल तर मीही वंदे मातरम् म्हणणार नाही!

स्वामी अग्निवेश यांची मुक्ताफळे

महाराष्ट्र मुस्लिम अवामी कमिटीच्या संभाजीनगर येथील धरणे आंदोलनात स्वामी अग्निवेश म्हणाले की, उच्च न्यायालयातील न्यायमूर्तीही वंदे मातरम् म्हणावे लागणार असल्याचे सांगत आहेत. यावरूनच देश कोणत्या पातळीवर जात आहे हे दिसून येते. जबरदस्ती कराल तर मीही 'वंदे मातरम्' म्हणणार नाही. देशभक्तीचे धडे देणे बंद करा. अन्याय-अत्याचारांच्या विरोधात लढावे लागणार आहे. दिल्लीत मुस्लिमांनी आंदोलन केले तर या आंदोलनात सर्वात पुढे मी असेन, अशी मुक्ताफळे स्वामी अग्निवेश यांनी यावेळी बोलताना उधळली.

मराठी अखबार दै.सामना में दि.२९.०७.१७ को छपा समाचार

'अब स्वामी अग्निवेश के उपरोक्त इस अनर्गल राष्ट्रद्रोही प्रलाप पर आर्य जगत् के विद्वान्, संन्यासी तथा सार्वदेशिक सभा एवं महर्षि दयानंद के सच्चे अनुयायी गंभीरता से सोचें और विचार करें। महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा श्री अग्निवेश के इस वक्तव्य का कडे शब्दों में निषेध करती है। (सभा के पास वीडिओ क्लिप है, जानना चाहते हो तो भेजी जायेगी।)

डॉ.ब्रह्ममुनि (प्रधान), माधव देशपांडे(मंत्री) एवं सभी पदाधिकारी,

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा

वेदों में समानता के सिद्धांत

– डॉ.धर्मेन्द्रकुमार शास्त्री

समानता शब्द से क्या अभिप्राय है? प्रतीत होता है कि सामाजिक समरसता, सामाजिक, राष्ट्रीय, पारिवारिक सौमनस्य व सामंजस्य की स्थापना करना ही समानता है। समानता में सुख है, सबका कल्याण है। यह साम्यभाव ही समानता कहलाता है। **'समत्वं योग उच्यते'** (गीता)

सब मानवजाति जन्म से एक से अवयवों वाला शरीर प्राप्त करती हैं, तो इनमें परस्पर भेद होने का कोई कारण नहीं। एक समान गर्भ की अवधि में माता के उदर में सबका विकास होता है, एक ही प्रकार से सबका जन्म होता है तो विभिन्नता का क्या कारण? वेदों में न केवल मनुष्यों को अपितु प्राणिमात्र को मित्र की दृष्टि से देखने का वर्णन मिलता है।

मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे। (यजु.३६/१८)

वास्तव में कुछ लोग प्रसिद्ध पुरुषसूक्त के **'पद्भ्यां शूद्रो अजायत'** (ऋग्वेद १०.९०.१२) इस मंत्रांश का हवाला देकर यह समझने लगते हैं कि शूद्रों का स्थान पांवों में है, इसलिए वे नीच हैं, निन्दित हैं और यह सोचकर उनका अपमान व तिरस्कार करते हैं। परन्तु जिस प्रकार शरीर में विभिन्न अवयवों की उपयोगिता होती है तथा प्रत्येक अंग का अपना-अपना कार्य एवं महत्त्व होता है, उसी प्रकार समाज में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्ररुपी अंगों की उपयोगिता एवं उपादेयता है। इनके अपने अपने कार्य हैं और सबका महत्त्व हैं। प्रश्न यह है कि क्या पांव निकृष्ट हैं या अनावश्यक हैं। सत्य तो यह है कि समस्त शरीर का आधार पांव हैं। उसी प्रकार शूद्र समाज के आधार हैं। वे किसी भी प्रकार से निन्दित गर्हणीय नहीं कहे जा सकते हैं। इन्हीं के क़ारण समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति होती है। सम्पूर्ण मानव समाज के ये आधार हैं। वर्ण शब्द का मतलब ही है चुनना, चयन करना! प्रत्येक व्यक्ति अपनी योग्यता और रुचि के अनुसार स्वतन्त्रतापूर्वक जिन कर्मों को करता है उनके भेद हैं-पढना-पढाना, विद्या के क्षेत्र में ज्ञानार्जन के क्षेत्र में कार्यरत होना, कुछ लोग राष्ट्र, समाज व पारिवारिक रक्षा में सहयोग देते हैं। कुछ लोग राष्ट्र की सम्पत्ति के उत्पादन, संवर्धन एवं संरक्षण में अपनी भूमिका निभाते हैं तथा कुछ लोग शारीरिक तप श्रम से उपर्युक्त तीनों कर्मों में सहयोग प्रदान करते हैं। इन्हीं चारों भेदों में मनुष्य समाज विभक्त होता है और प्रत्येक समुदाय को क्रम से

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र वर्ण से कहा जाता है, ऋग्वेद में वर्णन है-

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्
बाहू राजन्यः कृतः ।
उरु तदस्य यद् वैश्यः
पद्भ्यां शूद्रोऽजायत।।

प्रश्न उपस्थित होता है ये चारों वर्ण जन्म से होते हैं? नहीं । जिस मुनष्य में जैसे गुण, कर्म और स्वभाव होते हैं, तदनुसार ही वह उस वर्ण का अधिकारी होता है, जन्म से नहीं । इसीलिए गीता में भी जन्म को महत्त्व न देकर कर्म को ही महत्त्व प्रदान किया गया है- **चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः।** गुण, कर्म, स्वभाव के अनुसार चार वर्णों की सृष्टि की है । कोई भी व्यक्ति किसी भी विशेष वर्ग में जन्म लेकर अपने कर्म के आधार पर किसी भी दूसरे वर्ग में आने में समर्थ हैं । तो क्या शूद्र भी जन्म से नहीं होता ? कदापि नहीं । जन्म से वर्ण होता ही नहीं । जन्म के समय किसी भी मनुष्य में यह योग्यता नहीं होती कि वह स्वयं अपनी योग्यता और रुचि के अनुसार काम कर सके। यह योग्यता तो विद्यार्थी अवस्था की समाप्ति अर्थात् युवा अवस्था में ही हो सकती है ।वेदों के अनुसार समाज में न तो कोई बडा है और न ही कोई छोटा!

''अज्येष्ठासो अकनिष्ठास एते सं भ्रातरों वावृधुः सौभगाय।''

(ऋग्वेद ५/६०/५)

सभी परस्पर भाई हैं । सौभाग्य अथवा उन्नति के लिए साथ बढते हैं । समस्त मानवजाति को प्रेम की दृष्टि से देखने का निर्देश अथर्व वेद में मिलता है -

''प्रियं सर्वस्य पश्यत उत शूद्रे उतार्ये।

समाज में सभी चातुर्वर्ण्य में सबमें समान रुप से शोभा या दीप्ति का आधार करने की प्रार्थना की गयी है, जिससे सबका कल्याण हो और कोई भी अपमानित न हो

रुचं नो धेहि....राजसु नस्कृधि ।

(यजु.१८.४८)

समाज में सभी कार्य करनेवालों का समान महत्त्व है, सबका एक जैसा सम्मान है । इसीलिए इस मंत्र में सबका एक जैसा सम्मान है । इसीलिए इस मंत्र में सबको नमस्कार किया गया है - बढई, रथनिर्माता, कुम्हार, लुहार, शिकारी आदि -

''नमस्तक्षेभ्यो रथकारेभ्यश्च
वो नमो नमः
कुलालेभ्य कमरिभ्यश्च वो नमः।''

(यजु.१६.१७-४६)

यह वेद का ज्ञान सार्वजनिक है, सार्वकालिक है। सार्वभौमिक है। समस्त मानव जाति के कल्याण के लिए सृष्टि के आदि में भगवान यह ज्ञान प्रदान किया है-

यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः।

(यजु.२६.२)

पुरुषों के समान स्त्री जाति के लिए समान अवसर वेद में दर्शित हैं । वह भी ब्रह्मचर्य का पालन करती हुई युवक पति को प्राप्त करती है –

'ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम्।'

(अथर्व.११.५.१८)

स्त्री को वेद में सामान्य सम्मान ही नहीं दिया गया,अपितु उसे पराशक्ति बताया गया है। वह अधिष्ठात्री है। वह अदिति है, अखंड शक्ति है । नव वधू को कहा गया है कि तू अपने श्वसुर, सास, देवर, ननन्द अर्थात् पूर्ण परिवार की साम्राज्ञी बन जा –

सम्राज्ञी श्वशुरे भव सम्राज्ञी

श्वश्र्वो भव। (अथर्व १४.१.२२)

पति–पत्नी का समान व्यवहार को बताते हुए दोनों के संयोग को चकवा–चकवी के संयोग की उपमा दी गई है–

'चक्रवाकेव दम्पती।' (अथर्व १४.२.६४)

पारिवारिक सामंजस्य का समन्वय हो, समस्त मानवजाति परिश्रम करे। इसी के साथ मेहनत परिश्रम करते हुए जीने की इच्छा करे, यह उपदेश निम्न मंत्रांश में मिलता है –

कुर्वन्नेह कर्माणि जिजीविषेत् ।

(यजु.४०.२)

सभी को कर्म करना चाहिए । जागनेवाला व कर्म करनेवाला मनुष्य ही ऐश्वर्य सुख प्राप्त कर सकता है । वेद समस्त मानव जाति को श्रेष्ठ बनने का आदेश करता है **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।'**

वेद में किसी सम्प्रदाय का, जाति विशेष का, मत मतान्तरों का उल्लेख नहीं है । केवलमात्र मननशील मनुष्य बनने तथा औरों को भी दिव्य जीवन के लिए प्रेरित करने का उपदेश है –

"मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्।"

(ऋग्वेद १०.५३.६)

वैदिक दृष्टिकोण विशाल एवं व्यापक है। इसके अनुसार यह सारा संसार एक गांव है और उसके प्रत्येक प्राणी के सुख की कामना की जाती है –

'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्'

प्राणिमात्र की आत्मा को अपने समान समझना एवं अपने को सबके समान समझना। यह आत्मवत् दृष्टि न केवल मनुष्य जाति के प्रति होनी चाहिए, अपितु पशु–पक्षी आदि सभी प्राणियों के प्रति भी होनी चाहिए। इतनी व्यापकता, उदारता भरे शब्दों में ऋषि कहता है –

"यस्मिन् सर्वाणि भूतानि

आत्मन्नेवानुपश्यति।" (यजु.४०.७)

ऐसे व्यक्ति के लिए सारा संसार एक इकाई बन जाता है – सभी भाषागत रंग जाति सम्प्रदाय आदि भेदभाव से रहित हो

जाता है । यही है **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** की भावना ।

संसार के किसी भी देश का व्यक्ति हो प्रदेश या सम्प्रदाय का हो, उसकी रक्षा करना मनुष्यमात्र का कर्तव्य है -

पुमान् पुमांसं परिपातु विश्वतः।

(ऋग्वेद.६.७५.१४)

वेद की दृष्टि में समस्त पृथिवी ही एक विशाल, सबके साथ-साथ रहने का स्थान है, जिससे सभी प्रकार के लोग एक साथ यहाँ रह सकें -

महत्राधस्थं महती बभूविथ।(अथर्व.१२.१.१८)

पृथिवी की यह समग्र दृष्टि वेद की सार्वभौमिकता एवं समानता का उज्ज्वल प्रमाण है । पृथिवी की सभी दिशाओं उपदिशाओं में रहनेवाले लोगों में कोई भेदभाव नहीं है । जहाँ अन्यान्य सम्प्रदाय अपने-अपने सम्प्रदाय के लोगों के विषय में ही सोचते हैं, वहाँ वेद समस्त मानवता के लिए समग्र दृष्टि प्रस्तुत करते हैं ।

वेद के अनुसार पृथिवी सब प्रकार के विचारोंवाले, कर्तव्यों का पालन करनेवाले, विभिन्न भाषाएं बोलनेवाले सभी लोगों का एक घर हैं -

''जन बिभ्रती बहुधा विवाचसं
नानाधर्माणं पृथिवी यथौकसम्।''

(अथर्व.१२.१.४५)

वेद के अनुसार सभी एक समान है, उँच नीच का कोई भेदभाव नहीं। एक दूसरे का सम्मान, विवेकशील होना, सबको मिलकर गति प्रगति करने का सुअवसर मिले, एक दूसरे के प्रति मधुर भाषण, सबके सुख, शांति, प्रगति, समृद्धि के लिए कार्य करते हुए व्यवहार करने की भावना आदि सद्गुणों का विवरण मिलता है -

ज्यायस्वन्तश्चित्तिनो मा वियौष्ट...
समनसस्कृणोमि। (अथर्व.३.३.५.१)

मनुष्य मनुष्य का परस्पर ऐसा प्रेम स्नेह व्यवहार हो, जैसे गाय का नवजात बछडे के प्रति होता है । सारे संसार में सुख और शांति के लिए एक मनवाले होकर, सब मनुष्यों को साथ-साथ चलने व बोलने की प्रेरणा वैदिक ऋषि देता है-

''सहृदयं सांमनस्यम्...
वत्सं जातमिवाघ्न्या।''(अथर्व.३.३०.१)

इस समानता के लिए आवश्यक है, मनुष्य अकेला न खाए! बांटकर खाने की भावना सबके मन में होनी चाहिए-

''केवलाघो भवति केवलादी''।

(ऋग्वेद १०.१.१७)

समस्त समाज में समानता केवल भौतिक स्तर पर नहीं होनी चाहिए, अपितु सबके मन सबके कल्याण में एक समान होने चाहिए । सब प्राणियों के दुःखों का नाश और सबकी सुख समृद्धि की भावना की प्रमुख आवश्यकता है। इसलिए वेद के

उपदेश सारे समाज के पारस्परिक कल्याण के लिए और सबके सुख के लिए ही सबके कार्यों तथा उत्साह की प्रेरणा देता है। मनुष्यों को परस्पर सहायता करनी चाहिए, जिससे कि सबके सुख की उन्नति हो। सबके मनों में ऐसी समान भावना होनी चाहिए, जिससे कि दूसरों की प्रसन्नता में मनुष्य अपनी प्रसन्नता का अनुभव करें, किसी को दुखी देखकर प्रसन्न न हों। इस भावना का मूलाधार यजुर्वेद में वर्णित है-

''यस्तु सर्वाणि भूतानि...
ततो न विचिकित्सति।'' (यजु.४०.६)

जो व्यक्ति सब प्राणियों को अपने आप में और अपने आप को सब प्राणियों में निरन्तर देखता अथवा अनुभव करता है, तब वह संदेह नहीं करता। ऐसा व्यक्ति सब प्राणियों में विद्यमान मूलभूत जीवन सम्बन्धी समानता का अनुभव करता है। यदि किसी को दुख व कष्ट होता है, तो उसका हृदय करुणा से पिघल जाता है। उसे दुख की अनुभूति होती है। उसे अनुभूत होता है, जैसे यह कष्ट मुझे ही हो रहा है। यह समानता ही मानव धर्म है। इस समतामूलक मानव धर्म के अंगभूत सत्य, संकल्प, प्रेम, दया, करुणा, श्रद्धा इत्यादि गुण हैं। यह समत्त्व दृष्टि न केवल मनुष्यमात्र के प्रति होनी चाहिए, अपितु समस्त प्राणिजगत् के लिए होनी चाहिए -

विद्याविनयसम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि
शुनि चैव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः।
(गीता ५.१८)

यह सार्वभौम समत्व दृष्टि पूर्णतया वेदानुकूल है। यह समभाव ही ब्रह्म की प्राप्त करानेवाला बताया है-(मनु.१२.१२५)

एवं यः सर्वभूतेषु पश्यत्यात्मानमात्मना
स सर्वसमतामेत्य ब्रह्माभ्येति परं पदम्।।

यह सर्व समभाव माता, पिता, पुत्र, भाई-भाई, भाई-बहन, पति-पत्नी में यदि आ जाय तो परस्पर के झगडे वैमनस्य द्वेष की भावना समाप्त हो जाये। वेद में ऐसे समभाव व ऐसे परस्पर प्रेम का उपदेश है।

मा भ्राता भ्रातंर द्विक्षन् ....
वाचं वदत भद्रया। (अथर्व.३.३०.२.३)

हम कल्पना कर सकते हैं कि पूर्ण समाज में यदि यह प्रेम, यह एकात्मता हो, तो समाज कितना सुखी होगा? इस समानता का मतलब यह नहीं कि समाज से विविधता ही समाप्त हो जाए। यह बात वेद में भी स्वीकृत है। हमारे आचार-विचार-व्यवहार में विभिन्नता रहती ही है। दोनों हाथ देखनें में एक समान होने पर भी एक समान कार्य नहीं करते। दोनों में अंतर अवश्य होता है। फिर भी सर्व कल्याण का एक उद्देश्य लेकर भी अपने स्वभाव के अनुसार मनुष्य उसी प्रकार रह सकता है जिस प्रकार पृथिवी विविध रुपोंवाली होती हुई भी

सब प्रकार के मनुष्यों की रक्षा करने में तत्पर है।

जिस प्रकार सूर्य और चन्द्रमा सब प्राणिमात्र के कल्याण की भावना से निरन्तर कार्यरत होता हैं, उसी प्रकार हम भी सारे समाज के कल्याण मार्ग पर चलते रहें। उस मार्ग पर चलने के लिए हम निरन्तर दानशीलता, हिंसारहिंत भावना, ज्ञानी व्यक्तियों का संसर्ग प्राप्त करते रहें।

स्वस्ति पन्थामनुचरेम...

जानता संगमेमहि। (ऋग्वेद ५.५१.१५)

अथर्ववेद का भूमिसूक्त (अथर्व १२.१) सार्वभौमिक भावना का उत्तम उदाहरण है। किसी भी देश के निवासियों को इन छह तत्त्वों–सत्य, ऋत, दीक्षा, तपस्या, ब्रह्म और आस्तिकता को धारण करना इसकी विशेषता है। इतनी व्यापक दृष्टि से समस्त मानवता के विषय में ये विचार व्यक्त किये हैं। सत्य का अर्थ केवल सत्य भाषण नहीं, अपितु सबके हित में शिष्ट आचरण है। ऋत–सदा गतिशीलता को अपनाना। समाज के सभ वर्ग मेहनती परिश्रमी हों। आलसी, प्रमादी न बनें, अच्छे संकल्पवान् हों, परिश्रम करनेवाले हों, आस्तिकता तथा प्राणिमात्र के कल्याण की भावना सबके मनों में हों! ये नियम प्रत्येक राष्ट्र के निवासियों में यदि हों, जिनका पालन करके मनुष्य इस पृथिवी को सुखमय बना सकता हैं। इन नियमों के पालन से हम इतने उदार बन जाएं कि हम क्षुद्र सीमाओं में न बंधकर विशाल पृथिवी को अपना निवासस्थान समझें। इन छह तत्वों के निर्देश द्वारा वेद समस्त संसार के मानवों को श्रेष्ठ समाज के निर्माण की प्रेरणा देता है। इनके पालन से सांप्रदायिकता की संकीर्ण भावनाओं से मनुष्य मुक्त हो जाता है।

इस प्रकार विस्तृत विवेचन के आधार पर निष्कर्षत: यह प्रतीत होता है कि वेदों में समस्त मानवजाति को समानता की दृष्टि से देखने का विस्तार से वर्णन मिलता है। वैदिक सामाजिक मान्यताएं उदात्ततम भावनाओं की प्रेरणा देनेवाली है। इनमें सर्वत्र सद्‌गुणों एवं सत्कर्मों का अद्‌भुत समन्वय दिखाई देता है। भारत को यदि अपने स्वरुप को बनाए रखना है और स्वयं इस अशांति से बचकर विश्व को बचाना है, तो वैदिक समाज के आदर्शों का अनुसरण करके सामाजिक संतुलन स्थापित करना होगा। जातिवाद और अन्य कुरीतियों को छोडकर शोषित, दलित, वंचित वर्ग के साथ समानता का व्यवहार करना होगा। यही वेदों का मूल संदेश है।

(पूर्व सचिव, दिल्ली संस्कृत अकादमी)

ई–मेल : dharmendra064@gmail.com

मो.०९९९४२६४७४

स्वतन्त्रता दिवस पर विशेष-

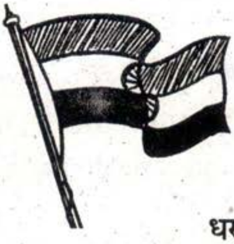

जय जय भारत भूमि महान्!

– राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति

धरती का जो स्वर्ग, वह है प्यारा भारत देश,
देवों की यह पुण्य भूमि सा, विस्तृत पृष्ठ प्रदेश,
इसे मिला है सदा प्रकृति का, मंगलमय अनुदान।
जय जय भारत भूमि महान् ।।

हरे भरे मैदान यहाँ पर, तथा कहीं कुसुमित घाटी,
गगन चूमते कहीं अचल हैं, पावन इसकी है माटी,
गर्वोन्नत जिसका ललाट है, भूधर नृप गिरिराज महान्। जय जय....।।

वैदिक संस्कृति आदि काल से, दिव्य भूमि पर रही समुन्नत,
सत्य-शिवम्-सुन्दरता पूरित दिव्य चरित्र जहाँ पर उन्नत,
जहाँ सदा होता आया है, मानवता गौरव गुणगान। जय जय....।।

राम कृष्ण की धरती है यह, दया-विवेकानन्द धरा,
ऋषि-मुनियों की तपोभूमि यह, इस पर हर्षित वसुंधरा,
सारा महिमण्डल करता है, इसकी संस्कृति पर अभिमान।जय जय....।।

दानी बलिदानी वीरों की जहाँ रही है टोलियाँ,
भगत-सुभाष-शिवा-राणा ने, खेली शोणित होलियाँ,
स्वतंत्रता के लिये जहाँ पर, तत्पर रहता है बलिदान। जय जय....।।

काश्मीर-केरल-कर्नाटक-तमिल-मिजोरम-अरुणाचल,
महाराष्ट्र-गुजरात-उडीसा-त्रिपुरा-सिक्किम तथा हिमाचल,
आन्ध्र-असम-पंजाब जहाँ बगाल सुशोभित राजस्थान । जय जय....।।

– मुसाफिरखाना, जि.सुलतानपुर(उ.प्र.)

राज्यस्तरीय निबन्ध प्रतियोगिताओं के परिणाम

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वर्ष २०१६ के लिए आयोजित दो निबन्ध प्रतियोगिताओं के परिणाम गत माह घोषित हुए, जिनका पुरस्कार वितरण दि.९ जुलाई २०१७ को श्रद्धानन्द गुरुकुल आश्रम में आयोजित विशेष समारोह में सम्पन्न हुआ। सभाप्रधान डॉ.ब्रह्ममुनिजी, कोषाध्यक्ष उग्रसेन राठौर, वैदिक विद्वान पं.राजवीरजी शास्त्री आदियों के करकमलों से विजेता छात्रों को पुरस्कार प्रदान किये।

विद्यालयीन प्रतियोगिता में लोकेश व सौरभ प्रथम

अहमदनगर के आर्यदम्पती सौ.तारादेवी एवं श्री प्रा.जयनारायणजी मुंदडा के गौरव में रखी गई राज्यस्तरीय विद्यालयीन निबन्ध प्रतियोगिता में परली-वैजनाथ स्थित भेल सेकेण्डरी स्कूल के छात्र चि.लोकेन्द्र राजेन्द्र सोनी एवं माजलगांव (जि.बीड) सिद्धेश्वर विद्यालय के छात्र सौरभ रामप्रसाद कदम इन दोनों ने संयुक्त रुप में प्रथम पुरस्कार (रु.१५००/-) किया, जब कि परली के ही सरस्वती विद्यालय की छात्रा कु.अश्विनी बलीराम बडे ने द्वितीय क्रमांक (रु.११००/-) पाया व तृतीय पुरस्कार (रु.७५०/-) हिंगोली के सरजूदेवी भारुका आर्य कन्या विद्यालय की छात्रा कु.शीतल संतोष कांबले एवं उमरगा (जि.उस्मानाबाद)के भारत विद्यालय की छात्रा कु.अनुराधा राजेन्द्र मंगाले ने हासिल किया।

महाविद्यालयीन निबन्ध प्रतियोगिता में कु.अमृता प्रथम

परली के आर्यदम्पती सौ.डॉ.विमलादेवी एवं श्री डॉ.सुग्रीव बलीरामजी काले(सभाप्रधान, डॉ.ब्रह्ममुनिजी) के गौरव में रखी गई राज्यस्तरीय महाविद्यालयीन निबन्ध प्रतियोगिता में सोलापुर के वालचन्द अभियान्त्रिकी महाविद्यालय की छात्रा कु.अमृता रवीन्द्र नकाते ने प्रथम पुरस्कार (रु.२०००/-) प्राप्त किया । द्वितीय पुरस्कार (रु.१५००/-) परली के कै.लक्ष्मीबाई देशमुख महिला महाविद्यालय की कु.दिशा बालासाहेब देवणे व कु.निकिता देविदास तपके इन दो छात्राओंने संयुक्त रुप में हासिल किये तथा तृतीय पुरस्कार (रु.१०००/-) भी इसी महाविद्यालय की कु.नीता रामराव पारेकर इस छात्रा ने प्राप्त किया।

इन दोनों प्रतियोगिताओं में पुरस्कार ग्रहण करनेवाले सभी विजेता छात्रों का महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से हार्दिक अभिनंदन एवं शुभाशीष..!

॥ओ३म्॥

माझा मराठाची बोलु कवतिके । परि अमृतातेंही पैजेसीं जींके ।
ऐसी अक्षरेंचि रसिकें । मेळवीन ॥ (संत ज्ञानेश्वर)

मराठी विभाग

उपनिषद संदेश

ईश्वराला कोण प्राप्त करु शकत नाही ?

नाविरतो दुश्चरितान्नाशान्तो नासमाहितः।
नाशान्तमानसो वावि प्रज्ञानेनैमाप्नुयात्॥ (कठोपनिषद-२/२४)

जो वेदादी शास्त्रात वर्णिलेल्या निषिद्ध पापकर्मांपासून वेगळा झालेला नाही. ज्याने आपल्या इंद्रियांना व मनाला संयमित करुन शांत केलेले नाही. तसेच ज्याने समाधीद्वारे इंद्रियांच्या वृत्तींना ब्रह्म्या(ईश्वरा)च्या दिशेने संलग्न केलेले नाही, तसेच जो धनादीच्या लोभ वगैरे वृत्तींमध्ये आसक्त झाला आहे. अशा प्रकारचा चंचल व अशांत झालेला माणूस वेदांचे अर्थ जाणून धारणायुक्त बुद्धीने देखील या ब्रह्मतत्वाला(ईश्वराला) प्राप्त करु शकत नाही.

दयानंद वाणी

श्रीकृष्णांचे थोर चरित्र

पाहा ! श्रीकृष्णाचा जो इतिहास महाभारतात दिलेला आहे, तो अत्यंत उत्तम आहे. त्यांचे गुण, कर्म, स्वभाव व चारित्र्य ही महापुरुषाला शोभावीत अशी आहेत. त्यामध्ये श्रीकृष्णाने जन्मापासून मरणापर्यंत कसलेही अधर्माचरण केले नाही अथवा कोणतेही दुष्कृत्य त्यांच्या हातून घडले नाही, असे लिहिले आहे. परंतू या भागवतकाराने वाटेल ते अनुचित दोष कृष्णाच्या माथी मारले आहेत. दूध, दही, लोणी इत्यादींची चोरी, कुब्जादासीशी समागम, परस्त्रियांशी रासक्रीडा इत्यादी खोटेच दोष (आरोप)श्रीकृष्णावर लादले आहेत. ते सारे वाचून व इतरांना वाचून दाखवून, स्वतः ऐकून व इतरांना ऐकवून इतर पंथांच्या लोकांनी श्रीकृष्णाची बदनामी चालविली आहे. हे भागवत नसते तर श्रीकृष्णासारख्या महात्म्याची खोटी निंदा मुळीच झाली नसती.

(सत्यार्थप्रकाश-११ वा समुल्लास)

असे जाहले पुरोहित शिबिर

– नारायण कुलकर्णी

अज्ञान, अंधश्रद्धा, रुढी परंपरा व वाईट कुप्रथा आदींनी ग्रासलेल्या समाजाला अंधाराच्या गर्तेतून बाहेर काढण्यासाठी महर्षी दयानंद सरस्वतींनी सुमारे १४२ वर्षांपूर्वी मुंबईमधील काकडवाडी येथे पहिल्या आर्य समाजाची स्थापना केली. या संस्थेचे धार्मिक, सामाजिक व आध्यात्मिक ज्ञान प्रसारकार्य आज सर्वत्र मोठ्या प्रमाणावर होत आहे. असे असतांनाही स्वार्थी हेतू साध्य करण्यासाठी तथाकथित पुरोहित म्हणवून घेणाऱ्या लोकांनी जनतेची पिळवणूक मात्र चालूच ठेवली. त्यावर योग्य तो प्रभावी उपाय म्हणून महर्षी दयानंद सरस्वती यांनी रचलेल्या **'संस्कारविधी'** या ग्रंथाप्रमाणे समाजात सोळा संस्कारांचे व विशुद्ध धार्मिक विधींचे प्रचलन व्हावे या पवित्र उद्देशाने महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभा गेल्या १७ वर्षांपासून प्रयत्नशील आहे. प्रतिवर्षी आयोजित केले जाणारे **'राज्यस्तरीय पुरोहित प्रशिक्षण शिबिर'** हा त्याचाच एक भाग आहे.

शिबिरात मी एक दिवस उशिराच पोहचलो. तसे जवळपास १२ वर्षांपूर्वी हे शिबिर मी पूर्ण केलेच होते. तरीपण 'रिफ्रेशर कोर्स'चा एक भाग म्हणून मी पुन्हा एकदा या शिबिरात सहभागी झालो. अगदी पहिल्याच दिवसापासून सभा व गुरुकुल संस्थेने शिबिरार्थ्यांची निवास व भोजनाची उत्तम व्यवस्था केली होती, ती देखील नि:शुल्कच ! शिबिरादरम्यान दानशूर आर्य कार्यकर्ते श्री जयकिशोरजी दोडिया यांनी गोड खाऊ पण वितरीत केला.

या शिबिरात ४-५ युवक व २-३ महिलांसह जवळपास ३० प्रशिक्षणार्थी सहभागी झाले. महाराष्ट्राच्या औरंगाबाद, बीड, जालना, नांदेड, लातूर या जिल्ह्यातील विविध ठिकाणाहून (विशेषत: कर्नाटकातूनही एक प्रतिनिधी) मोठ्या श्रद्धेने या शिबिरात आले. शिबिराचे मुख्य प्रशिक्षक व सोलापूरचे आर्य विद्वान पं.श्री राजवीरजी शास्त्री यांनी आपल्या अनुभवात्मक विद्वद्कौशल्याने शिबिरार्थ्यांना सर्व संस्कारांचे प्रशिक्षण दिले. त्यांची भाषा व वाणी गोड, तेजस्वी, ओजस्वी व प्रसाद गुणांनी युक्त आहे. संस्कारांचे महत्त्व पटवून देतांना ते का, कसे व केंव्हा करावेत? हे विस्ताराने सांगत. सर्व संस्कारांचा गाभा म्हणजे यज्ञ(हवन) होय. हा कसा संपन्न करावा व त्याची पद्धत कशी असावी? मंत्रोचारण शुद्ध, स्पष्ट व सुरेल आवाजात कसे असावेत? या संदर्भात त्यांनी अतिशय

मौलिक असे विवेचन आपल्या रसाळ गोमट्या वाणीतून केले.

शिबिरार्थ्यांचे कुठे चुकत असेल, तर ते आम्हाला पुन्हा-पुन्हा सांगत व ते मंत्र शुद्ध स्वरुपात कसे म्हणावेत? हे अगदी प्रेमळ भाषेत समजावून सांगत. मंत्रांचे उच्चारण ऱ्हस्व, दीर्घ व प्लुत कसे असावे? यावर त्यांचा विशेष भर असे! संस्कार संपन्न करत असतांना पुरोहिताने मंत्रभाग किती प्रमाणात घ्यावा ? त्यांचा अर्थ कसा पटवून सांगावा व यासाठी लागणारे वेळेचे नियोजन कोणत्या पद्धतीने करावे? त्यांनी अतिशय चांगल्या पद्धतीने मार्गदर्शन केले.

श्री शास्त्रीजींनी व इतर प्रशिक्षकांनी **'गर्भाधान संस्कार'** (ज्याला आपण आपल्या अप्रभंषित भाषेत वटभरण म्हणतो) व त्यानंतर गर्भ स्थापित झाल्यानंतर दुसऱ्या किंवा तिसऱ्या महिन्यात तो स्थिर होऊन शारीरिक दृष्ट्या सुदृढ व्हावा म्हणून **'पुंसवन संस्कार'** (चोर चोळी) आणि त्यानंतर ६ व्या महिन्यात गर्भाचा योग्य तो मानसिक विकास साधावा, या उद्देशाने **'सीमंतोन्नयन संस्कार'** (डोहाळ जेवण) व शेवटी जातकर्म संस्कार (जन्मणे) हे बाळाच्या जन्माअगोदरचे संस्कार आम्हां सर्वांना समजावून सांगितले व त्यांचे प्रशिक्षणही चांगल्याच पद्धतीने दिले. बाळाच्या जन्मानंतर ११व्या, १०१ व्या दिवशी किंवा पहिल्या वाढदिवशी **'नामकरण संस्कार'** (बारसे), दोन-तीन महिन्यानंतर **'निष्क्रमण संस्कार'** (सटवाईला बाळाला घेऊन जाणे), ६ व्या महिन्यात अन्न प्राशन संस्कार, त्यानंतर ११ व्या महिन्यात **'चुडाकर्म संस्कार'** (जावळ काढणे), त्यानंतर ३ वर्षाच्या आत **'कर्णवेध संस्कार'** (कान टोचणे), ८ ते १२ व्या वर्षापर्यंत उपनयन संस्कार(यज्ञोपवित, मुंज) व त्यासोबतच वेदारंभ संस्कार, २५व्या वर्षानंतर **'समावर्तन संस्कार'**(दीक्षांत समारोह), तत्पश्चात **'विवाह संस्कार'**(लग्न), ५० वर्षानंतर वानप्रस्थ व ७५ वर्षानंतर संन्यास संस्कार आणि शेवटचा **'अंत्येष्टी संस्कार'** हे सर्व १६ संस्कार या शिबिरात शिकविण्यात आले. याबरोबरच मानवी जीवनात आणखीन काही प्रसंग येत असतात. जसे की, शालाकर्म (घराचे बांधकाम सुरु करणे), गृहप्रवेश (घराची नव्हे तर घरात राहणाऱ्या कुटुंबियांच्या मन व हृदयांचे समाधान-शांती), उद्योग व व्यवसायाचा शुभारंभ, उद्घाटने व इतर कार्यक्रम आणि वर्षभरात येणारे सामाजिक व धार्मिक पर्व, उदा.पाडवा, दसरा, दिवाळी, संक्रांत, होळी, श्रावणी आदी हे सर्व सण कसे साजरे करावेत? यज्ञविधीमध्ये कोणकोणते मंत्र म्हणावेत या संदर्भातही सर्व सखोल माहिती राजवीरजी शास्त्री यांनी आम्हा सर्वांना

दिली.

श्री शास्त्रीजींचा ताण कमी व्हावा व इतरही विद्वान मंडळींना प्रशिक्षण देण्याची संधी उपलब्ध व्हावी, या दृष्टिकोनातून सभेने परळीतील तज्ज्ञ युवक पुरोहितांना संस्कार प्रशिक्षणासाठी शिबिरात आमंत्रित केले होते. त्यांनी त्यांच्या उच्च ज्ञानाच्या आधारे शिबिरार्थ्यांना काही संस्कार शिकविले. यात डॉ.नयनकुमार आचार्य यांनी नामकरण व अंत्येष्टी संस्कार पूर्ण केला. प्रा.अरुण चव्हाण यांनी उपनयन संस्कार शिकविला, तर सर्वात महत्वाचा विवाह संस्कार डॉ.वीरेंद्र शास्त्री यांनी पूर्ण केला. पं.प्रशांतकुमार शास्त्री हे एक दिवस आले व आम्हां सर्वांचा उत्साह वाढविला. ते एखादा संस्कार घेतील व त्यांच्याही अनुभवाचा लाभ आम्हाला घेता येईल? अशी आशा होती, पण तसे कांही घडले नाही. शिबिराची दिवसभराची दिनचर्या अतिशय व्यस्त स्वरुपाची होती. पहाटे ४.३० च्या गजरापासून रात्री ९ वाजेपर्यंत आम्ही पूर्णवेळ प्रशिक्षणाच्या कार्यात व्यस्त होतो. गुरुकुलातील ज्येष्ठ वानप्रस्थी व प्रसिद्ध वैद्य श्री विज्ञानमुनिजी यांनी सकाळी ५.३० ते ७.१५ वाजेपर्यंत आम्हा सर्वांना योगासने, प्राणायाम आणि निसर्गोपचाराचे प्रशिक्षण दिले. त्यानंतर स्नान झाल्यावर सकाळी ७.३० ते ८.३० पर्यंत शास्त्रीजींच्या ब्रह्मत्वाखाली दररोज बृहद्‌यज्ञ संपन्न होई. यज्ञानंतर सभेचे भजनोपदेशक पं.प्रतापसिंह चौहान व इतर कांही प्रशिक्षक आपल्या सुमधुर आवाजातून धार्मिक भजने सादर करीत आणि त्यानंतर शास्त्रीजींचे आध्यात्मिक प्रवचन होई. सकाळचा हा धार्मिक कार्यक्रम चालू असतानाच यज्ञ शाळेशेजारील वृक्षवल्लीतून पक्षांचा किलबिलाट कानी घुमत असे. त्यामुळे जणु कांही ते देखील आमच्या यज्ञकार्यात सहभागी झाल्याचा प्रत्यय अनुभवयाला येत असे. शेवटी यजमानांना सद्‌भावपूर्वक आशीर्वाद दिले जाई.

भोजनशाळेत सकाळचा नाष्टा झाल्यानंतर सकाळी १० ते १२.३० पर्यंत बौद्धिक सत्र चाले. तर दुपारचे सत्र दोन ते पाच दरम्यान चालत असे. मध्येच १५ मिनिटांचे मध्यंतर होत असे. सकाळच्या सत्रात संस्कारांबरोबरच विविध सैद्धांतिक विषयावरही मार्गदर्शन, तर दुपारी केवळ संस्कारांचे प्रशिक्षण व मार्गदर्शन होत असे. सत्र सुरु होण्याअगोदर भजनोपदेशक पं.प्रतापसिंहजी चौहान यांच्या उंच पहाडी आवाजातून प्रेरणात्मक गीतांचा आनंद घेण्याचे भाग्य लाभले. यामुळे आलेला कंटाळापण दूर होत असे. सभेचे वेदप्रचार अधिष्ठाता पं.लक्ष्मणराव आर्य गुरुजी यांचे अभ्यासपूर्ण वाणीतील मराठी प्रवचन आम्हां सर्वांना फारच भावले.

दोन्ही वेळचे भोजन आम्ही सर्वजण पंक्तिबद्ध होऊन अतिशय आनंदाने घेत असू. आदरणीय सोममुनिजी, सेवायती यांच्या मार्गदर्शनाखाली भोजन चांगल्या प्रकारे बनविण्यात आले. त्यामुळे आम्हास रुचकर भोजनाचा आस्वाद घेता आला. दुपारचे सत्र संपल्यावर सायंकाळी आयुर्वेदिक चहाची व्यवस्था करण्यात आल्यामुळे दिवसभराचा शीन निघून जाई व आम्हाला ताजेतवाणे वाटे. सायंकाळी फेरफटका मारुन आल्यानंतर सभागृहासमोर सामूहिक संध्या व प्रार्थना होत असे. तत्पश्चात पं.सोगाजी गुन्नर व पं. प्रतापसिंहजी यांचे सुश्राव्य भजन ऐकण्यास मिळे. त्यानंतर दररोज एका विद्वान व नवपुरोहितांचे प्रबोधन होई. याचवेळी परळी शहरातील अनेक आर्य कार्यकर्ते भेटी देत असत व मार्गदर्शन करीत. एके दिवशी सभेचे प्रधान श्रद्धेय डॉ.ब्रह्ममुनिजी आणि सभेचे कोषाध्यक्ष व आर्य समाजाचे मंत्री उग्रसेनजी राठौर यांचेही मार्गदर्शन झाले.

शिबिराचे संयोजन सभेचे वेदप्रचार अधिष्ठाता श्री लक्ष्मणराव आर्य गुरुजी यांच्याकडे होते. ते त्यांनी उत्तमप्रकारे पार पाडले. लोक पैसे, धन, वस्त्र व इतर वस्तुंचे दान करतात. पण समय दान करणारे विरळच सापडतात. श्री नयनकुमार आचार्य यांनी बराच वेळ देऊन प्रभावीपणे नियोजन केले. त्यांना श्री रंगनाथजी तिवार यांचे मोलाचे सहकार्य लाभले. शिबिराची नाव नोंदणी व वृत्तांत लेखनकार्य श्री आर्यमुनिजी यांनी केले. परळीच्या आर्य समाजाचे प्रधान व माजी नगराध्यक्ष श्री जुगलकिशोरजी लोहिया, देविदासराव कावरे, जयकिशोरजी दोडिया, जयपाल लाहोटी, विजयप्रसाद अवस्थी आदींनी भेटी देऊन आमचा उत्साह वाढविला.

दि.९ जुलै रोजी शिबिराचा समारोप सभेचे प्रधान डॉ.ब्रह्ममुनिजी यांच्या अध्यक्षतेखाली पार पडला. प्रमुख पाहुणे म्हणून आचार्य श्री जयेंद्रजी शास्त्री उपस्थित होते. तर श्री उग्रसेनजी राठौर व इतर मान्यवरांची प्रमुख उपस्थिती होती. याप्रसंगी वयोवृद्ध तपस्वी वानप्रस्थी श्री सोममुनिजी यांचा सत्कार करण्यात आला. सहभागी शिबिरार्थ्यांनी व्यक्त केलेली मनोगते फारच बोलक्या स्वरुपाची होती. यावेळी सर्वांना प्रमाणपत्रांचे वितरण करण्यात आले. शिबिराचे प्रमुख मार्गदर्शक श्री पं.राजवीर शास्त्री, पं.प्रतापसिंह चौहान यांचा विशेष सम्मान करण्यात आला. ठिक-ठिकाणाहून आलेल्या पुरोहित मित्रांमध्ये आनंदात राहण्याचा व निसर्गरम्य वातावरणात बागडण्याचा योग आला आणि पौरोहित्य कर्माचे प्रशिक्षण घेण्याचे भाग्य लाभले. अशाच प्रकारे भविष्यातही सभेतर्फे पुरोहित शिबिरांचे आयोजन व्हावे, अशी अपेक्षा!

- आर्यकुटी, नवीन कौठा,
माहेश्वरी भवन जवळ, नांदेड
मो.८८८८३३११०४

मत-पंथ(धर्म), राजकारण आणि भ्रष्टाचार

– गोपाळ विठोबा शिंदे(शिवपुरकर)

स्वातंत्र्योत्तर काळातील राजकीय व धार्मिक घटनांकडे पाहिले असता ह्या दोन्ही संस्थांचा एक विकृत चित्रपट डोळ्यासमोर येतो आणि स्वातंत्र्यासाठी तन-मन-धन अर्पण करुन देशाला स्वातंत्र्य मिळवून देणाऱ्या थोर देशभक्तांची आठवण खिन्न करुन सोडते. सत्तेचा दाखला हातात धरुन बिनधास्त सैराट वर्तन करणारे भ्रष्ट राजकारणी प्रथम डोळ्यासमोर येतात. भ्रष्टाचार म्हणजे सत्ताधाऱ्याकडून झालेली आर्थिक लूट एवढाच अर्थ आज लोकमानसात रुजला आहे.

समाजमनावर सत्तेपेक्षा अधिक प्रभाव पाडणारे मत-पंथ(धर्म) नावाचेही एक बलस्थान आहे. राजकारणाकडे पाहण्याचा सामान्यांचा दृष्टिकोन केवळ आर्थिक असून धर्माकडे पाहण्याचा दृष्टिकोन वैचारिक आहे. आर्थिक आणि वैचारिक या दोन पातळीवर धर्माचा भ्रष्टाचार चालत आला आहे-चालू आहे, हेही तितकेच खरे आहे. राजकीय पातळीवरही कांही नेते नि:स्वार्थ असतील आणि धर्मपातळीवरही कांहीजण अनुकरणीय असतील, पण ते अपवाद होत. अपवादाचे शास्त्र होत नाही. म्हणून सांप्रत ह्या दोन्ही संस्था भ्रष्टाचरणीच ठरतात. तसे पाहिले असता त्यांचा हा पारंपारिकच गुणधर्म आहे. वैदिक काळातील धर्माचरण आणि रामराज्यासारखे एखादे राजकारण ह्याबाबतीत अपवादही असतील. धर्म हेच अधिष्ठान मानून त्या आनुषंगाने राज्यकर्ते जी आचारसंहिता तयार करतात, ते असते त्या राज्याचे संविधान! हे संविधानच राजधर्म व लोकधर्मही असतो. संविधानातील कायद्याला अनुसरुन लोकव्यवहारावर राज्यव्यवहाराचे वर्चस्व असते.

कायद्याचा अंमल नीट होत नसला म्हणजे राजकारणात आर्थिक भ्रष्टाचाराची लागण होते किंवा शासनकर्त्यावर अंकुश ठेवणारी कोणतीही कायद्याची शक्ती संविधानात नसल्यामुळेही भ्रष्टाचाराला मोकळे रान मिळत असेल तर त्यात नवल नाही. उपयुक्त नसलेला उपकारक कायदा तयार करणे हे सत्तेच्याच हातात असते. आपली घटना पारंपारिक मत-पंथ (धर्म) प्रधान नसूनही संविधानातील काही वैचारिक तरतुदीमुळे ती आपोआप तशीच म्हणजे मत-पंथ प्रधानच आहे, असेच म्हणावे लागते. तथाकथित मूलभूत धर्माची व्याख्या व त्याचे स्वरूप समजून न घेता मानवनिर्मित मत-पंथ व जातींना महत्व दिले जात आहे. खऱ्या धर्माचे वर्चस्व

झुगारुन आधुनिक राज्यप्रणालींनी लोककल्याणकारी (School Welfair) ही विचारधारा स्वीकारली आहे.

लोकमानसात उत्तम वैचारिकतेचे सहज रोपण होत नाही, त्याचे सहजपणे उच्चारण मात्र होऊ शकते. केवळ उाम विचाराच्या भजनाने काय साध्य होते? हा संशोधनाचा विषय आहे. विकार हा माणसाचा स्थायी भाव आहे.त्याच्या निराकरणाचे काम धर्मसंस्था, लोकशिक्षण हे आहे. धर्मसंस्था आपल्या देशात नीटपणे करीत नाही. कारण या व्यवस्थेने संप्रदायांनाच धर्म संबोधले आहे. धर्मसंस्थेचे सार म्हणजे घटनेतील लोकल्याणकारी राज्याची संकल्पना (Concept) हीच आहे. कायदा हे तात्पुरते इंजेक्शनाचे काम करते हे खरे मानूनही कायद्याचेच राज्य असते, ही संकल्पनाच समर्थ ठरत नाही का? मन परिवर्तन होऊन रामराज्य यायलाही हीच कायद्याच्या राज्याची संकल्पना मदतच करते हे खरे नाही का ? शाळकरी मुलाने शालेय अनुशासनाचे नियम झुगारुन देऊन स्वैरवर्तनाचा अवलंब केला तर काय होईल याचा विचार न करणेच बरे नाही का ? विकाराच्या स्थायी भावातच भ्रष्टाचाराच्या स्थायित्वाची मूळे आहेत, असे म्हटले तर नवल वाटायचे काहीच कारण नाही! **'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय'**च्या संदर्भातील एखादा कायदा करुनही भ्रष्टाचार का जाणार आहे? लोकांची मनेच परिवर्तीत झाली पाहिजेत. लोकमन परिवर्तनाची प्रक्रिया ही धार्मिक आहे. नीती हा धर्माचा बंधन नसलेला कायदा आहे. तो वैचारिक भ्रष्टतेने बरबटलेल्या तथाकथित धर्मपंडितांच्या हातात आहे. त्याचा अंमल करणारी त्याची अंधश्रद्धा नावाची शक्ती आहे.

सांप्रदायिक दहशतीच्या जोरावर या शक्तीचे समाजमनावर अधिराज्य चालते, अशा प्रकारे धर्मकारण पातळीवर या श्रद्धेच्या अधिराज्यात मठमंदिरातून वैचारिक भ्रष्टतेबरोबरच आर्थिक भ्रष्टतेचाही अमल चालतो. हे नुकतेच उघड झालेल्या मठमंदिरातील सोन्या-चांदीच्या डोंगरावरुन कळत नाही का ? धर्मकारण आणि कायदा ह्याच्या दहशतीचा मात्र परिणाम भिन्न असतो. सांप्रदायिक दहशतीचे परिणाम अमाणुसकीचे तर कायद्याच्या दहशतीचे परिणाम माणूसकीला पूरक असू शकतात. सांप्रत राजकारण्यांना न कळण्या इतके हे तत्त्व अवघड आहे काय ? पण हे राज्यकर्ते लोकमन परिवर्तनाची भाषा किती दांभिकपणे करीत आहे याचे दर्शन घडते. विकाराचे विचारांत परिवर्तन होण्याला वेळ लागतो, तोपर्यंत त्याला रान मोकळे सोडायचे का ? **'विकाराला रान मोकळे करु नका, विचारांना करा'** असे म्हणणाऱ्यांचे चुकते काय ? कायद्याने

विकारी माणूस परिवर्तीत होत नाही. त्याच्यावर कायदा लादावा लागतो. चोर कुलूप तोडणारच म्हणून ते लावायचेच नाही का ? मग असे जर असेल तर राज्यकर्त्यांनी कायदे न करता लोकांच्या अनिष्ट वर्तनाला आळा घालण्यासाठी दुसरा कोणता मार्ग जवळचा आहे हे दाखवावे., आळा घालणे हे मनाचे मूळ परिवर्तन जरी नसले तरी ते अनिष्ट वर्तनाच्या मार्गाचे कवाड आहे. कायदा करुन मनपरिवर्तन होतच नाही, हे म्हणणे म्हणजे भ्रष्टाचाराचे कवाड उघडे ठेवून त्या परिवर्तनाचे नपुंसक धडे लोकांना देण्यात कोणते तथ्य आहे ?

– भवानीनगर, औराद–शहाजानी
ता.निलंगा जि.लातूर,
मो.९०४९११८७९४०

परमेश्वराची भक्ती का व कशासाठी ?

– प्रल्हाद मानकोसकर

मानवी जीवनात ईश्वराच्या भक्ती व उपासनेला फार महत्त्व आहे. त्या सर्वज्ञ जगन्नियंत्या परमेश्वराच्या कृपेनेच आपणांस हा अमूल्य नरदेह लाभला आहे. त्याच्यामुळेच आपले इहलोक सफल होऊन परलोकाचाही मार्ग सुकर होतो. म्हणूनच त्या भगवंताविषयी कृतज्ञता व्यक्त करणे हे आपले परमकर्तव्य आहे. आजच्या भौतिक वातावरणात माणूस भगवतांला व त्याच्या खऱ्या स्वरुपाला पूर्णपणे विसरला आहे. ही कृतघ्नता म्हणजे मोठा अपराधच नाही का ?

शरीरात बळ, हृदयात स्फूर्ती व उत्साह आणि डोक्यात प्रतिभा असली तरच खऱ्या अर्थाने भगवंताची भक्ती होत असते. सद्बुद्धी असली की माणूस विचार करतो व विवेकशील बनतो. खरोखरच आपण कोणाची भक्ती करावी? ती का व कशासाठी आणि कोणत्या पद्धतीने करावी? याचेही भान असावयास हवे. याकरिता विवेकाची फार गरज असते. भक्ती म्हणजे फुलांच्या माळा, नारळ, हळद–कुंकू हे कोणत्यातरी दगडाला वाहिले म्हणजे झाले, असे आज कांही अज्ञानी लोकांना वाटते. म्हणूनच त्यांचा तशा प्रकारचा प्रयत्न सुरु असतो. खरे तर देव हा सर्वव्यापक व सर्वांतर्यामी आहे. तो कुलपात बंद नसतो. तसेच चार भिंतीतही कोंडून ठेवता येत नाही. त्याची सत्ता सर्वत्र व्यापक आहे. तसेच तो सर्वशक्तिमान, अविनाशी, अजर व अमर आहे. चारही वेद, उपनिषद आणि दर्शन शास्त्र परमात्म्याच्या यथार्थ स्वरुपाचे दिग्दर्शन करतात. पण आम्ही मात्र हे आर्ष ग्रंथ सोडून पुराणादी अनार्ष ग्रंथातील कपोलकल्पित अवतारी (साकार)

भगवंताच्या प्राप्तीसाठी वेळ घालवतो. यामुळे तो ईश्वर प्राप्त तर होतच नाही. याउलट अंधश्रद्धांमध्ये भरच पडते.

ईश्वर हा सृष्टीचा निर्माता, पालक, पोषक व संरक्षक आहे. त्या महान शक्तीला कोण्या शैतानाची किंवा इतरांची कदापी आवश्यकता नाही. कृपाळू ईश्वराने स्वत:कडे चार महत्त्वपूर्ण जबाबदाऱ्या घेतल्या आहेत. त्या पुढीलप्रमाणे- १)सृष्टीची उत्पत्ती करणे, २) सृष्टीचे संरक्षण व संचालन करणे, ३) सृष्टीचा विनाश करणे, ४) जीवांना त्यांच्या-त्यांच्या कर्मानुसार फळ व योग्य तो न्याय देणे.

इतके श्रेष्ठ कर्म व कर्तव्य करणाऱ्या महान ईश्वराची (देवाची) विशुद्ध पद्धतीने भक्ती व उपासना करणे सोडून आम्ही देशदेशांतरातील इतर मानवनिर्मित तीर्थस्थळे व मठमंदिरामध्ये व्यर्थ भटकत आहोत. यामुळे ईश्वर तर भेटतच नाही व खऱ्या अर्थाने सुख पण लाभत नाही. परमात्मा ही भेटण्याची व पाहण्याची वस्तू नाही. आत्म्यामध्ये त्याचा अनुभव घ्यावा लागतो. **'अनुभवे गोडी कळो येईल'** महर्षी स्वामी दयानंद सरस्वतींनी वेदांच्या आधारे ईश्वराचे सत्यस्वरुप प्रकट केले. त्याचबरोबर त्याची मनोभावे शुध्द अंत:करणाने भक्ती व उपासना करण्याचा आग्रह केला आहे.

ईश्वर ज्या प्रमाणे वरील चार गोष्टींची जबाबदारी पार पाडतो. त्याचप्रमाणे मानवाची सुद्धा चार कर्तव्ये आहेत, जर काय ती कर्तव्ये आपण सत्यकर्म करीत चांगल्या प्रकारे पार पाडली व आचरण देखील पवित्र व शुद्ध ठेवले तर मानव या संसाररुपी भवसागरातून तरुन जावू शकेल. मानवाची चार कर्तव्ये म्हणजे **'धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष'** हे चार पुरुषार्थच होय. यांचे पालन निष्ठेने केल्यास जीवन खऱ्या अर्थाने समृद्ध बनल्याशिवाय राहत नाही. धन मिळवावे पण त्याच आधार धर्म असावा. शास्त्रांनी धनाची कधीही निंदा केली नाही. पण ते कमावतांना आपली वृत्ती प्रामाणिक असली पाहिजे, असे सांगितले आहे.

गीता पण हेच तत्त्वज्ञान सांगते- 'अर्थाजन करा, संसार(प्रपंच) थाटा, आनंदाने जगा, पण हे सर्व धर्मानुसार, न्यायाने व सत्य मार्गानेच!' धर्मपूर्वक कमावलेले धन हे सत्वगुणी असते. दररोजच्या व्यवहारामध्ये जे कर्म, कारण व जो व्यवहार असेल तो देखील सत्याने व न्यायानेच केला पाहिजे. इतके केले तर या जन्मासोबतच पुढील जन्मसुद्धा चांगला होईल व योगमार्गाने आपण मोक्ष देखील मिळवू शकतो. दुर्दैवाने आज अनेक लोक पुष्कळ संपत्ती असल्याने खऱ्या निराकार व एकदेशी (सर्वत्र) असलेल्या परमेश्वराला सोडून यात्रा, तीर्थाटने करीत आहेत. अनेक बुवा व गुरु लोकांच्या चरणी बसून त्यांन

मोठ्या प्रमाणात दान-दक्षिणा देत आहेत. गुरु हे ज्ञानहीन असले तरी त्यांचा ते श्रद्धेने अभिषेक देखील करतात. हे सर्व काही निरर्थक आहे. ही आपली भटकंती अनेक जन्माच्या दुःखाचे कारण आहे. यामुळे पुण्य कधीच लाभणार नाही. मोक्ष ही तर लांबची गोष्ट! महर्षी दयानंदांनी वेदांचे तत्त्वज्ञान पाच हजार वर्षानंतर जगासमोर मांडले. त्यांनी 'सत्यार्थप्रकाश', संस्कारविधी, ऋग्वेदादी भाष्य भूमिका यासारखे ग्रंथ आम्हां सर्वांना दिले. पण आपण यांचे वाचन करीत नाहीत. खऱ्या अर्थाने ऋषी प्रणित वरील ग्रंथांचे व अन्य आर्ष ग्रंथांचे वाचन करुन त्यांनी सत्य सिद्धांत स्वीकारणे व अविद्येचा त्याग करणे हेच इष्ट आहे. वेदज्ञानानेच सर्व प्रकारच्या अज्ञानाचा लोप होऊन शुद्ध स्वरुपात यथार्थ ज्ञानाचा उदय होईल व त्यामुळेच सर्वांना शाश्वत सुखाचा लाभ होईल. याकरिता ईश्वर सर्वांना सद्बुद्धी देवो, हिच कामना!

- मु.पो.निटूर ता.निलंगा जि.लातूर
मो.९६३७६७६९३९

राज्यात श्रावणी वेदप्रचार उत्साह सुरु

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेच्या वतीने दि.२४ जुलै पासून राज्यातील विविध आर्य समाजांमध्ये श्रावणी वेदप्रचार कार्यक्रमांना उत्साहात सुरुवात झाली आहे. उत्तर भारतातील व राज्यातील विद्वान व भजनोपदेशक अतिशय प्रसन्न मनाने ठिकठिकाणी वेद ज्ञानाचा प्रचार व प्रसार करीत आहेत. शहरी व ग्रामीण भागातील आर्यसमाज मंदिरामध्ये विविध तारखांना आयोजित श्रावणी उत्सवांतील भजन व प्रवचन ऐकण्यासाठी श्रोत्यांची गर्दी होत आहे.

दररोज सकाळी वेदपारायण यज्ञ, धार्मिक भजन व प्रवचने व संध्याकाळी राष्ट्रीय व सामाजिक विषयावरील व्याख्याने पार पडत आहेत. तर शाळा-महाद्यिलयांमध्येही विद्यार्थ्यांसाठी प्रबोधनपर कार्यक्रम होत आहेत. आजपर्यंत पुणे, मराठवाडा, जळगाव आदी भागात कार्यक्रम चांगल्या पद्धतीने कार्यक्रम पार पडल्याची माहिती त्या-त्या आर्य समाजाच्या पदाधिकाऱ्यांनी आम्हाला कळविली आहे. सर्व विद्वान व भजनोपदेशक दान-दक्षिणेची अपेक्षा न करता कर्तव्य भावनेने प्राप्त परिस्थितीत वेदप्रचाराच्या कार्यात तल्लीन झाल्याचे निदर्शनास आले आहे. त्याचबरोबर त्या-त्या ठिकाणचे आर्य कार्यकर्ते व पदाधिकारी वेदांचा संदेश जनसामान्यांपर्यंत पोहचविण्यासाठी तळमळीने कामाला लागले आहेत. सर्वांचे मनःपूर्वक अभिनंदन...! - सभामंत्री

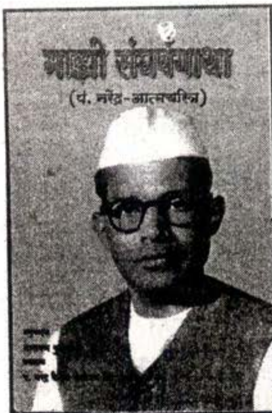

ग्रंथ–समीक्षण

पं.नरेंद्रजींचे प्रेरक आत्मचरित्र

– प्रा.देवदत्त तुंगार

हैदराबाद स्वातंत्र्य संग्रामातील क्रांतीकारी आर्यनेते पं.नरेंद्रजी यांच्या **'जीवन की धूप–छांव'** या आत्मचरित्राचा मराठी अनुवाद नांदेडचे आर्य लेखक श्री नारायणराव कुलकर्णी यांनी केला आहे. **'माझी संघर्ष गाथा'** या नावाने प्रसिद्ध झालेल्या या मराठी ग्रंथाची समीक्षा प्राचार्य श्री देवदत्त तुंगार यांनी केली आहे. ती वाचकांसाठी देत आहोत.– संपादक

हैदराबाद मुक्ती लढ्याचे धडाडीचे सेनापती आणि प्रखर समाज सुधारक, दक्षिण केसरी आर्य युवक हृदयसम्राट पं.नरेंद्रजी आर्य जगतातील एक अविस्मरणीय व्यक्तिमत्व होते. स्वातंत्र्यपूर्व आणि स्वातंत्र्योत्तर काळात आर्य समाजाने जे क्रांतिकारक व भरीव कार्य केले आणि जी अनेक आंदोलने केली. त्यात पंडितजींचा लक्षणीय सहभाग होता.

पंडितजींनी आपल्या अविरत आत्मशोधाची जी कथा हिंदी भाषेत लिहिली त्याचा मराठी अनुवाद नांदेड येथील एक आर्यसमाजी कार्यकर्ते श्री नारायणराव कुलकर्णी यांनी केला असून वाचकांच्या तो पसंतीस पडेल अशी अपेक्षा आहे. श्री कुलकर्णी यांचे या स्तुत्य कार्याबद्दल मी अभिनंदन करतो! पंडित नरेंद्रजींना तारुण्यावस्थेतच सामाजिक आणि आध्यात्मिक भान आले होते. जीवनाचा ध्येय–मार्ग त्यांनी निश्चित केला होता. चार–चौघांसारखा सामान्य माणसाचा संसार न करता सर्वस्व अर्पण करुन देशसेवा व समाजसेवा करावी या भव्योदात्त विचाराने पंडितजी झपाटले होते. 'आत्म–शोध' घेण्यासाठी नगर जिल्ह्यातील उपासनी बाबा, शिर्डीचे साईबाबा यांचे देवस्थान व ख्यातकीर्त 'पंढरपूर' आदी ठिकाणी त्यांनी भटकंती केली. स्वामी दयानंद, समर्थ रामदास आदी प्रमाणे त्यांनी गृहत्याग करुन 'आत्म–शोध' घेतला. त्यांच्या आईने पंढरपुरला नरेंद्र असल्याचे कळल्याने तेथे जाऊन शोध घेतला व ते आईकडून पकडले गेले. मातृप्रेमाने न्हावून निघाल्याने आई बरोबर ते पुनश्च हैदराबादला पोचले.

देवस्थानातील एकूण सर्व व्यवहार खऱ्या धर्मप्रेमी पंडितजींना उबग

आणणाराच होता. मूर्तिपूजेवरील श्रद्धा उडेल अशीच सर्व परिस्थिती होती. सुदैवाने दिल्लीचे महान तर्कवाचस्पती पं.रामचंद्रजी देहलवी तसेच पं.बुद्धदेवजी विद्यालंकार (स्वामी समर्पणानंद) यांचे दर्शन पंडित नरेंद्रजींना झाले. त्यांचे विचार ऐकण्यास व समजून घेण्यास मिळाले व नरेंद्रजी आर्यसमाजी झाले !

हैदराबाद मुक्ती लढा, पंजाबचे हिंदी रक्षा आंदोलन, गोरक्षा आंदोलन, शुद्धी आंदोलन व इतर आंदोलने यात पंडितजींनी हिरिरीने भाग घेतला. हैदराबादच्या मध्य-दक्षिण आर्य प्रतिनिधी सभेचे ते दीर्घकाळ 'सर्वेसर्वा' होते. पंडित विनायकराव विद्यालंकार(रावसाहेब) आदींचे त्यांना मार्गदर्शन व सहकार्य लाभले. त्यामुळेच ते दक्षिण भारताचे मान्यवर आर्य-नेते बनले. हैदराबादच्या विधानसभेत ते कॉंग्रेसचे आमदारही होते. माझ्या आठवणीप्रमाणे सुमारे ३०० रु. त्यांना आमदारकीचे मानधनही मिळत असे. माझ्यासारख्या होतकरु गरीब विद्यार्थ्याला ते त्यातून पाच-दहा रुपये मदत देत असत. दिगंबरराव होळीकर, जनार्दन वाघमारे, गर्जे आदींनाही त्यांचा स्नेह व आशीर्वाद होता. माझ्यावर १९५४ ते १९६० मी हैदराबादला कॉलेजचा विद्यार्थी असतांना त्यांची विशेष कृपा होती. 'देवदत्त मेरा मानसपुत्र है' असे मला गौरवित असत. १९६० नंतर मी नांदेडला आलो व पंडितजींना आर्यसमाजाच्या कार्यक्रमासाठी बोलवीत असे. तेंव्हा ते अनेकदा आले.

पंडित नारायणराव कुलकर्णी हे माझे दिवंगत घनिष्ट स्नेही डॉ.कुशल देव शास्त्री यांच्या सहवासात आले व त्यांच्याकडून लेखन व प्रवासाची प्रेरणा घेऊन आर्य समाजाची सेवा करीत आहेत. म्हणूनच हा अनुदित ग्रंथ अनुवादकाने स्व.डॉ. कुशलदेवजींना समर्पित केला आहे. या ग्रंथास पं.नरेंद्रजींचे परमशिष्य व ज्येष्ठ विचारवंत डॉ.जनार्दनराव वाघमारे यांची विस्तृत प्रस्तावना लाभली आहे. एकूण८० पृष्ठांचा या ग्रंथाची छपाई अतिशय उत्तम प्रकारे झाली आहे. चतुरंग मुखपृष्ठ व मलपृष्ठ आकर्षक आहेत. दोन्ही पृष्ठांच्या मागे क्रांतिकारी आर्यनेत्यांची व आर्य सुधारकांचे रंगीत चित्रे प्रसिद्ध झाली आहेत. परळीच्या पं.नरेंद्र वैदिक संशोधन केंद्राच्या वतीने प्रकाशित करण्यात आला आहे. याचे मुद्रण शार्प कॉम्प्यूटर ॲण्ड प्रिंटर्स नांदेड यांनी केले असून याची किंमत रु.१०० इतकी ठेवण्यात आली आहे.

श्री कुलकर्णी यांच्याकडून भावी काळात भरीव साहित्य-सेवा घडो, हीच शुभकामना !

– 'निरामय', कला मंदिरामागे, वजिराबाद, नांदेड. मो.९३७२५४१७७७

वार्ताविशेष

पर्जन्यवृष्टी महायज्ञ उत्साहात संपन्न

दिवसेंदिवस पावसाचे प्रमाण कमी होत चालल्याने पाण्याचा गंभीर प्रश्न सर्वांना भेडसावत आहे. या समस्येपासून सोडवणूक व्हावी व भरपूर पाऊस पडावा, या उद्देशाने महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेच्या मार्गदर्शनाखाली आर्य समाज संभाजीनगर (औरंगाबाद) च्या वतीने नुकतेच दि.२७ जून ते २ जुलै दरम्यान पर्जन्यवृष्टी महायज्ञाचे आयोजन करण्यात आले होते.

शहरापासून जवळच असलेल्या गांधेली गावात ग्रामपंचायतच्या सहकार्याने हा ७ दिवसीय महायज्ञ अतिशय उत्साहात पार पडला. सरपंच श्री आसाराम पाटील तळेकरांच्या हस्ते ओ३म् ध्वजारोहण करून महायज्ञाचे उद्घाटन झाले. त्यानंतर गावातून शोभायात्रा काढण्यात आली.

दररोज सकाळी ९ ते ११ व दु.४ ते ७ या वेळात हा महायज्ञ पार पडत असे. या यज्ञाकरिता वृष्टिविशेषज्ञ डॉ.कमलनारायणजी आचार्य (रायपूर-छत्तीसगढ) यांना ब्रह्मा व व्याख्याते म्हणून तर पं.सुरेंद्रपालजी आर्य(नागपूर), पं.संदीपजी आर्य(मुज्जफरनगर), पं.विद्यानिधी शास्त्री यांना भजनोपदेशक म्हणून आमंत्रित करण्यात आले होते.

यज्ञासाठी बनविण्यात आलेल्या विशाल यज्ञकुंडात दररोज यज्ञप्रेमी यजमान सपत्निक उपस्थित राहून श्रद्धेने आहुत्या प्रदान करीत होते. यज्ञानंतर मान्यवर विद्वानांचे प्रबोधनपर मार्गदर्शन होत असे. त्यांनी यज्ञमहिमा, वैदिक तत्त्वज्ञान, ईश्वराचे स्वरुप, भक्ती, उपासना या विषयांबरोबरच मानवी जीवन, सामाजिक व राष्ट्रीय कर्तव्य, वैदिक मानवता धर्म आदी विषयांवर सोप्या भाषेत प्रकाश टाकला.

या यज्ञकाळात जवळपास ५०० यजमान जोडप्यांनी वैदिक मंत्रांच्या उद्घोषात आहुत्या प्रदान केल्या. यज्ञाची पुर्णाहूती विधानसभेचे अध्यक्ष श्री हरिभाऊ बागडे, माजी आमदार ओमप्रकाश पोकर्णा, राहुल सावंत, आसाराम पाटील, चंपालाल देसरडा, हरिभाऊ रसाळ आदींच्या उपस्थितीत संपन्न झाली. यावेळी श्री बागडे यांनी उपस्थितांना **यज्ञ महिमा** या विषयावर मार्गदर्शन केले. लोकसभेतील शिवसेनेचे उपनेते खा.चंद्रकांत खैरे यांनी शेवटची आहुती प्रदान केली. या यज्ञात जवळपास १०२ प्रकारच्या औषधी वनस्पती, गायीचे शुद्ध तूप आणि सुगंधित समिधा वापरण्यात आल्या होत्या. सभेचे उपप्रधान श्री दयारामजी बसैये, जुगलकिशोर दायमा, सौ.सविता जोशी, ॲड.जोगेंद्रसिंह चौहान व समस्त बसैये परिवार आणि गावकऱ्यांनी हा यज्ञ यशस्वी केला.

पुरोहित प्रशिक्षण शिबिरास उत्स्फूर्त प्रतिसाद

विशुद्ध पद्धतीने वैदिक १६ संस्कार, यज्ञविधी, नैमित्यिक कर्म, पर्व(उत्सव), आदींचा प्रचार व प्रसार व्हावा व याकरिता उत्तम आर्य पुरोहित घडावेत, या उद्देशाने महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेने यावर्षी परळी येथील स्वामी श्रद्धानंद गुरुकुल आश्रमात राज्यस्तरीय पुरोहित प्रशिक्षण शिबिराचे आयोजन केले होते.

दि.२ ते ९ जुलै दरम्यान आयोजित या शिबिरात मुख्य प्रशिक्षक म्हणून प्रसिद्ध मराठी वैदिक विद्वान पं.राजवीरजी शास्त्री (सोलापूर) यांना आमंत्रित करण्यात आले होते. त्यांनी शिबिरात सहभागी प्रशिक्षणार्थ्यांना अतिशय उत्कृष्टरित्या सर्व वैदिक संस्कारांचे प्रशिक्षण दिले. वैदिक संध्या व बृहद् यज्ञ, १६ संस्कार आदींच्या मौलिक प्रशिक्षणासह आदर्श पुरोहित होण्याच्या दृष्टीने आवश्यक बाबींचे मार्गदर्शन श्री शास्त्री यांनी केले. त्यांच्यासोबतच सर्वश्री वीरेंद्र शास्त्री, नयनकुमार आचार्य, अरुण चव्हाण यांनीही कांही संस्कारांचे प्रशिक्षण दिले. सभेचे भजनोपदेशक पं.प्रतापसिंह चौहान व पं.सोगाजी घुन्नर यांनी मधुर भजने सादर करुन प्रशिक्षकांचा उत्साह वाढविला.

शिबिराचा समारोप सभेचे प्रधान डॉ.ब्रह्ममुनिजी यांच्या उपस्थितीत पार पडला. यावेळी पं.जयेंद्र शास्त्री (भुवनेश्वर), उग्रसेन राठौर आदी प्रमुख पाहुणे म्हणून उपस्थित होते. डॉ.ब्रह्ममुनिजी यांनी आपल्या मार्गदर्शनपर भाषणात पुरोहित हा समाजाचा मार्गदर्शक व राष्ट्राचा निर्माता असल्याचे सांगून आर्य पुरोहितांनी आपल्या आदर्श जीवन व्यवहाराने आर्य समाजाचा गौरव वाढवावा, असे आवाहन केले. सध्या मोठ्या प्रमाणात संस्कार करणाऱ्यांची आवश्यकता असून तरुण पिढीने एक उत्तम पुरोहित बनून ही जबाबदारी पार पाडावी, असेही ते म्हणाले. यावेळी मान्यवरांच्या हस्ते शिबिरार्थ्यांना प्रमाणपत्रांचे वितरण करण्यात आले. काहींनी यावेळी आपले शिबिरकालीन अनुभव देखील कथन केले.

शिबिरकाळात परळी आर्य समाजाचे पदाधिकारी व कार्यकर्ते यांनी शिबिरस्थळी येऊन उत्साह वाढविला. श्री विज्ञानमुनिजी यांनी दररोज सकाळी योगासने, प्राणायाम व आयुर्वेदाचे प्रशिक्षण दिले. श्री लक्ष्मण आर्य यांनी या शिबिराचे उत्तमरीत्या संयोजन केले. शिबिरात महाराष्ट्र व कर्नाटकातील विविध ठिकाणाहून जवळपास ३० प्रशिक्षणार्थी सहभागीझालेहोते.शिबिराच्या सफलतेसाठी आश्रमातील मुनीवृंद, शिक्षक व आर्य कार्यकर्त्यांनी प्रयत्न केले.

शोकवार्ता

विशाल धर्मदासानी यांचे निधन

पिंपरी पुणे येथील आर्य समाजाचे युवा कार्यकर्ते व आर्यवीर दलाचे सदस्य श्री विशाल जयरामजी धर्मदासानी यांचे २६ जुलै २०१७ रोजी सायं.७.३० वा. अल्पशा आजाराने दु:खद निधन झाले.

आर्य समाजाच्या प्रचार कार्यात त्यांचा सक्रिय सहभाग होता. आर्यवीर दलाच्या शिबिर आयोजनात व तसेच विविध उपक्रमात ते मोठ्या उत्साहाने सहभागी होत असत. अशा एका आर्य तरुणाच्या आकस्मिक निधनाने आर्यसमाज पिंपरीची मोठी हानी झाली आहे. त्यांच्या पार्थिवावर दुसऱ्या दिवशी दुपारी वैदिक पद्धतीने अंत्यसंस्कार करण्यात आले.

नारायण मुनिजींचे देहावसान

परळी येथील स्वामी श्रद्धानंद गुरुकुल आश्रमातील सेवाभावी सदस्य व सोनपेठ (जि.परभणी) येथील धार्मिक कार्यकर्ते श्री नारायण मुनिजी (पूर्वाश्रमीचे नारायणराव चव्हाण) यांचे दि.०८ ऑगस्ट रोजी वृद्धापकाळाने दु:खद निधन झाले. मृत्युसमयी ते ७४ वर्षांचे होते. त्यांच्या पश्चात मुलगा श्री अशोक, एक मुलगी, नातू असा परिवार आहे.

स्व.मुनिजी हे शांत, मनमिळावू, कष्टाळू, नि:स्पृह, सेवाभावी व श्रद्धाळू वृत्तीचे होते. परळी आर्य समाजाचे दिवंगत ज्येष्ठ कार्यकर्ते स्व.दौलतरावजी गिरवलकर यांच्या सान्निध्यात आल्यामुळे श्री नारायणमुनिजी आर्यसमाजी विचारांकडे वळले. **'सत्यार्थ प्रकाश'** हा ग्रंथ वाचून त्यांच्यात वैदिक सिद्धांत दृढ झाले. एक साधारण कष्टकरी शेतकरी व शेतमजूर माणूस सत्संगाने वैदिक धर्माचा अनुयायी बनतो, याचे ज्वलंत उदाहरण म्हणजे श्री नारायण मुनिजी होय. डॉ.ब्रह्ममुनिजी यांच्या प्रेरणेने त्यांनी वानप्रस्थ दीक्षा घेतली व आर्यसमाजाच्या सेवेसाठी स्वत:ला झोकून दिले. गेल्या १५ वर्षांपासून ते श्रद्धानंद गुरुकुल आश्रमात धान्य भांडार विभागप्रमुख म्हणून जबाबदारी सांभाळत होते. अलीकडील काळात त्यांची प्रकृती त्यांना साथ देत नव्हती. त्यातच त्यांनी जगाचा निरोप घेतला. त्यांच्या पार्थिवावर परळी आर्य समाजाच्या वतीने वैदिक पद्धतीने अंत्यसंस्कार करण्यात आले. सर्वश्री विज्ञानमुनिजी, अमृतमुनिजी, कर्ममुनिजी, शिवदास नागरगोजे, कराड आदींनी हा अंत्यविधी पार पाडला. श्री ब्रह्ममुनींसह आर्यसमाज परळीच्या पदाधिकाऱ्यांनी स्व.नारायणमुनिजींना श्रद्धांजली वाहिली.

वरील दोन्ही दिवंगतांना ईश्वर शांती व सद्‌गती प्रदान करो, अशी प्रार्थना व भावपूर्ण श्रद्धांजली !

।। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।।

वेदों की ओर लौटो !

वेद प्रतिपादित मानवीय
जीवन मूल्यों को
जन-जन तक पहुँचाने हेतु
कार्यतत्पर सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा

(पंजीयन-एच. 333/र.नं.६/टी.इ. (७)१६७/१०४९,
स्थापना ५ मार्च १९७७)

- 'वैदिक गर्जना' मासिक मुखपत्र
- आर्य समाज दिनदर्शिका
- पू. हरिश्चन्द्र गुरूजी गौरव-'मानवता संस्कार एवं आर्यवीरदल शिविर'
- आर्य कन्या वैदिक संस्कार शिविर
- पातञ्जल ध्यानयोग शिविर
- प्रान्तीय आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर
- पुरोहित प्रशिक्षण शिविर
- मानव जीवनकल्याण वेद प्रचार (श्रावणी) उपाकर्म अभियान
- स्व. विठ्ठलराव बिराजदार स्मृति विद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- सौ. तारादेवी जयनारायणजी मुंदडा विद्यालयीन राज्य.निबंध स्पर्धा
- सौ. कलावतीबाई व श्री मन्मथअप्पा चिल्ले (आनन्दमुनि) महाविद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- विद्यार्थी सहायता योजना
- सौ.डॉ. विमलादेवी व श्री डॉ.सु.ब.काले (ब्रह्ममुनि) महाविद्यालयीन राज्य. निबन्ध स्पर्धा
- स्व.पं. रामस्वरूप लोखण्डे स्मृति संस्कृत राज्य प्रतियोगिताएं
- मानवजीवन निर्माण अभियान - विद्यालय व महाविद्यालयों के लिए (वैदिक व्याख्यानमाला)
- शान्तिदेवी मायर स्मृति मानवनिर्माण एवं सेवा योजना
- स्व. भसीन स्मृति एवं मायर गौरव स्वास्थ्य रक्षा एवं चिकित्सा शिविर
- शान्तिदेवी मायर विधवा सहायता योजना
- वैदिक साहित्य भेट योजना
- पंथ-जातिप्रथा निर्मूलन अभियान
- वैदिक साहित्य प्रकाशन योजना
- आपत्कालीन सहायता योजना
- पर्जन्यवृष्टि यज्ञ अभियान
- गौ-कृषि सेवा योजना
- स्वा.सै.श्री गुलाबचंदजी लदनिया गौरव राज्य योगासन प्रतियोगिता
- सौ.धापादेवी गु. लदनिया गौरव राज्य प्राणायाम प्रतियोगिता

पर्जन्यवृष्टि महायज्ञ, गांधेली(सम्भाजीनगर)

यज्ञ का महत्त्व विशद करते हुए ब्रह्मा आचार्य डॉ.कमलनारायणजी। साथ में हैं पं.सुरेंद्रपालजी, बसैये बंधू, पं.संदीपजी वैदिक, एड.चौहान आदि ।

यज्ञ में सम्मिलित महाराष्ट्र विधानसभा के अध्यक्ष श्री हरिभाऊ बागडे का संबोधन।

वृष्टि महायज्ञ में आहुतियाँ प्रदान करते हुए लोकसभा के शिवसेना उपनेता सांसद श्री चंद्रकांतजी खैरे एवं अन्य ।

Reg.No.MAHBIL/2007/7493*Postal No.L/Beed/18/2015-17

सेवा में,
श्री. ____________________

प्रेषक -
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
आर्य समाज, परली-वैजनाथ.
पिन ४३१ ५१५ जि.बीड (महाराष्ट्र)

यह मासिक पत्र सम्पादक व प्रकाशक श्री मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वैदिक प्रिंटर्स, परली वैजनाथ इस स्थलपर मुद्रित कर महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के संपर्क कार्यालय आर्य समाज, परली वैजनाथ ४३१५१५ (महाराष्ट्र) इस स्थान से प्रकाशित किया।

भावपूर्ण श्रद्धांजलि !

जीवेत् शरदः शतम् !

॥ ओ३म् ॥

आर्य समाज, परली-वैजनाथ, जि.बीड
के दिवंगत वरिष्ठ कार्यकर्त्ता, भजनोपदेशक
तथा कट्टर वेदानुगामी व्यक्तित्व
स्व.श्री.सदाशिवरावजी पाटलोबा गुट्टे
के द्वितीय स्मृतिदिवस (७ जून २०१७) के उपलक्ष्य में
उनकी धर्मपत्नी **श्रीमती सुशीलाबाई गुट्टे व परिवार**